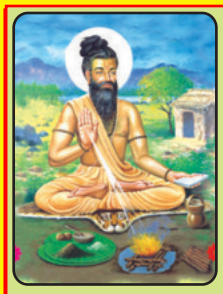

अखिल भारतीय जांगिड ब्राह्मण महासभा का मासिक पत्र

जांगिड ब्राह्मण

JANGID BRAHMAN

अंगिराऽसि जंगिडः

वर्ष: 114, अंक: 10, अक्टूबर-2021 ई., तारीख 22-27 प्रति माह

श्री विश्वकर्मणे नमः

POSTED UNDER LICENCE NO. U(DN) 39/2021 OF POST WITHOUT PREPAYMENT OF POSTAGE

महासभा की ओर से आप सबको दीपावली पर्व की हार्दिक शुभकामनाएं

कुल पृष्ठ-64

प्रधान- स्व.नेमीचन्द जांगिड

सम्पादक-ओमप्रकाश सैवाल

अखिल भारतीय जांगिड ब्राह्मण महासभा के प्रथम प्रेरक

पं.बाबू गोरधनदास जी शर्मा, मथुरा

डॉ. इन्द्रमणि जी शर्मा, लखनऊ

पं.पालाराम जी शर्मा, रायपुरखल-पंजाब

सभा के जन्मदाता

पं.डालचन्द जी शर्मा, जहाँगीराबाद-उ.प्र.

गुरूदेव पं.जयकृष्णजी मणीठिया, दिल्ली

समाज के महापुरूष

स्व.श्रीमती सुन्दरदेवी, दिल्ली

महासभा भवनदानकर्ता, दिल्ली

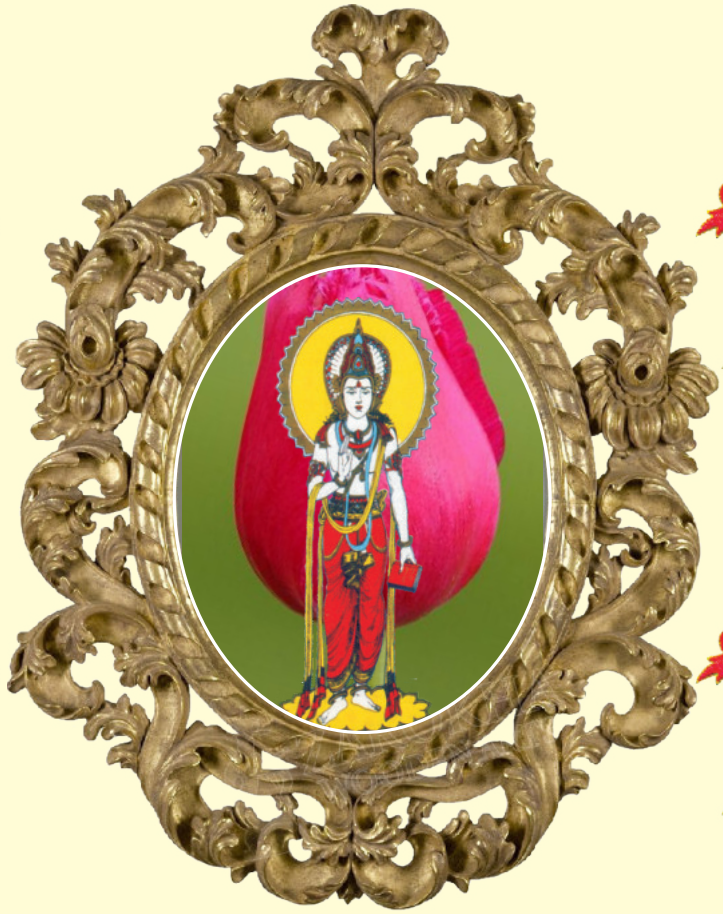

।। श्री विश्वकर्मा जी की आरती ।।

ॐ जय श्री विश्वकर्मा, प्रभु जय श्री विश्वकर्मा ।
सकल सृष्टि के कर्ता, रक्षक श्रुति धर्मा ।। ॐ...

आदि सृष्टि में विधि, श्रुति उपदेश दिया ।
जीव मात्र का जग में, ज्ञान का विकास किया ।। ॐ..

ऋषि अंगिरा ने तप से, शांति नही पाई ।
ध्यान किया जब प्रभु का, सकल सिद्ध आई ।। ॐ...

रोग ग्रस्त राजा ने, जब आश्रय लीना ।
संकट मोचन बनकर, दुःख दूर कीना ।। ॐ...

जब रथकार दंपति, तुमरी टेर करी ।
सुनकर दीन प्रार्थना, विपत्ति हरी सगरी ।। ॐ...

एकानन चतुरानन, पंचानन राजे ।
द्विभुज, चतुर्भुज दसभुज, सकल रूप साजे ।। ॐ...

ध्यान धरे जब पद का, सकल सिद्धि आवे।
मन दुविधा मिट जावे, अटल शांति पावे ।।ॐ...

श्री विश्वकर्मा जी की आरती, जो कोई नर गावे ।
कहत गजानंद स्वामी, सुख संपति पावे ।। ॐ...

।। ब्रह्म ऋषि अंगिरा जी की आरती ।।

ॐ जय ऋषि अंगिरा, स्वामी जय ऋषि अंगिरा ।
परमपिता सुख दाता, हरें सकल पीरा ।। ॐ...

आदि सृष्टि में उपजे, गुरू पद प्राप्त किया ।
ब्रह्मादिक ऋषियों को, सद उपदेश दिया ।। ॐ...

अथर्ववेद युग द्रष्टा, बहु विधि श्रुति गावें ।
आंगिरस गुरू बृहस्पति, सुर गुरू कहलावें ।। ॐ...

वंशज भये भुवन सुत, भौवन विश्वकर्मा ।
ब्रह्मा सम गुणवन्ता, रक्षक श्रुति धर्मा ।। ॐ...

यज्ञ हेतु अग्नि का, आविष्कार किया ।
आश्रम अंगिरा का, पावन धाम भया ।। ॐ...

शीश जटा मणि सोहे, तिलक भाल राजे ।
कांधे सूत्र जनेऊ, पीताम्बर साजे ।। ॐ...

तक्षशिला आर्यवर्त में, गुरूकुल खोल दिया।
विश्वविद्या का जग में, ज्ञान विकास किया ।।ॐ...

जांगल देश तपोवल, धनुर्वेद ज्ञाता ।
जंग हेतु भये जांगिड, ब्राह्मण विख्याता ।। ॐ...

गुरू महिमा ऋषि आरती, जो कोई जन गावे ।
'हरिदेव' शरणागत, सुख सम्पति पावे ।। ॐ...

ॐ जय ऋषि अंगिरा, स्वामी जय ऋषि अंगिरा ।
परमपिता सुख दाता, हरें सकल पीरा ।। ॐ...

'जांगिड ब्राह्मण' पत्र के नियम एवं उद्देश्य

1. समाज में भावात्मक एकता, सहभागिता, सदाचार एवं नैतिकता जैसे गुण प्रोत्साहित करना।
2. साहित्य सृजन, आध्यत्मिक चेतना एवं आत्मविश्वास को प्रोत्साहन देना।
3. सामाजिक गतिविधियों के अन्तर्गत केन्द्रीय, प्रादेशिक, क्षेत्रीय एवं स्थानीय समाचारों को प्रकाशित करना।
4. सामाजिक शिक्षा, वैज्ञानिक तकनीकी एवं शिल्पोन्नति संबंधी निबंध तथा लेखों आदि को प्रकाशित करना।
5. समाज में व्याप्त कुरीतियों को उजागर कर उनके उन्मूलन हेतु जनाधर तैयार करना।
6. पत्र प्रत्येक अंग्रेजी मास की 22-27 तारीख को प्रकाशित होता है।
7. लेखों व अन्य प्रकाशनार्थ भेजी सामग्री को छापने, न छापने तथा घटाने-बढ़ाने का पूर्ण अधिकार सम्पादक के पास सुरक्षित है।
8. व्यक्तिगत तथा विवादास्पद लेख पत्र में प्रकाशित नहीं किए जाएंगे।
9. लेखन सामग्री भेजने वाले स्वयं उसके लिए उत्तरदायी होंगे।
10. नमूने का अंक उपलब्ध होने पर ही भेजा जा सकता है।

स्वामित्व एवं सर्वाधिकार सुरक्षित

अखिल भारतीय जांगिड ब्राह्मण महासभा

प्रधान कार्यालय

440, हवेली हैदर कुली, चांदनी चौक, दिल्ली-110006

दूरभाषः- 011-42420443, 011-42470443

Website: www.abjbmahasabha.com

E-mail: jangid.mahasabha@gmail.com

सम्पर्क सूत्र

प्रधान-स्व.पं.नेमीचन्द शर्मा ''जांगिड''	-	09825231894
महामंत्री-पं.अनिल एस. ''जांगिड''	-	09015815597
सम्पादक-पं.ओमप्रकाश सैवाल ''जांगिड''	-	09416104774
उप-सम्पादक-प.रामभगत शर्मा ''जांगिड''	-	09814681741
सह-सम्पादक-पं.मनोहर लाल शर्मा ''जांगिड''	-	09968910271

'जांगिड ब्राह्मण' महासभा की सदस्यता दर (01-10-2018 से)

सदस्यता		रुपये
प्लैटिनम सदस्य	-	1,00,000/-
स्वर्ण सदस्य	-	51,000/-
रजत सदस्य	-	25,000/-
विशेष सम्पोषक	-	21,000/-
सम्पोषक सदस्य	-	11,000/-
संरक्षक (पत्रिका सहित)	-	2,100/-
संरक्षक (पत्रिका रहित)	-	500/-
वार्षिक पत्रिका शुल्क	-	240/-

विज्ञापन शुल्क की दरें

टाईटल का अंतिम पृष्ठ (रंगीन)
मासिक 20000/-,वार्षिक 200000/-

अन्दर का पूरा पृष्ठ (रंगीन)
मासिक 13000/-,वार्षिक 125000/-

अन्दर का आधा पृष्ठ (रंगीन)
मासिक 9000/-, वार्षिक 91000/-

अन्दर का पूरा पृष्ठ (साधारण)
मासिक 5000/-, वार्षिक 51000/-

अन्दर का आधा पृष्ठ (साधारण)
मासिक 3000/-, वार्षिक 30000/-

अन्दर का चौथाई पृष्ठ (साधारण)
मासिक 1500/-,वार्षिक 15000/-

वैवाहिक विज्ञापन
मासिक 501/-

महासभा बैंक खाता

अखिल भारतीय जांगिड ब्राह्मण महासभा के **स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया खाता नं. 61012926182 (IFSC Code: SBIN0030139)** में किसी भी स्थान से बैंक (शाखा-एसबीआई, एसएमई टाऊन हॉल, चांदनी चौक, दिल्ली-06) में 25000/- रू. प्रतिदिन नकद जमा करवाए जा सकते है। जमाकर्त्ता से अनुरोध है कि जमापर्ची की काउण्टर फाईल मय सम्पूर्ण विवरण (पाने वाले का नाम ''अखिल भारतीय जांगिड ब्राह्मण महासभा'' अवश्य लिखें) सहित महासभा को आवश्यक रूप से प्रेषित करें। तथा प्रत्येक लेन-देन पर 60/- रूपये बैंक चार्जेज के रूप में अतिरिक्त जमा करायें, अन्यथा महासभा उस कार्य को करने में असमर्थ रहेगी। क्योंकि बैंक चार्जेज का आर्थिक बोझ महासभा पर पड़ता है।महासभा को दिया गया दान आयकर अधिनियम 1961 की धारा 80-G के तहत छूट के लिए मान्य है।दानदाता अपनी आयकर विवरणी में दान पर आयकर छूट के लिए दावा कर सकते है।

सोमदत्त शर्मा ''जांगिड''
कोषाध्यक्ष महासभा, मो. 9811131031

अनुक्रमणिका

07. सम्पादकीय.....
10. आम सूचना
11. नाशवान् पदार्थों से प्रीति क्यों..
12. महान कलाकारों और शिल्पकारों..
14. जियों और जीने दो....
16. जिलासभा सीहोर,म0प्र0 द्वारा जनगणना.
19. वृद्ध माता-पिता और दादा दादी...
21. विजयादशमी
23. ईश्वर हमें सद्बुद्धि प्रदान करें
25. आनन्द का भाव आपके अन्दर...
26. सेवा निवृत्ति का परमानन्द...
27. आधुनिक युग में परिवार विलुप्त...
29. विदेशों में हरियाणा के लोकप्रिय.
31. मुण्डका में महासभा भवन-दानदाताओं..
39. आवश्यक सूचना जिलासभा हरियाणा
40. चुनाव में भाग लेने वाले प्रत्याशी हेतु.
41. प्रेरणादायी प्रसंग
42. कर्मवीर
44. ईश्वर और सुन्दर भविष्य
45. जांगिड समाज की होनहार प्रतिभाएं..
50. कविताएं..
51. हिन्दुओं का प्रसिद्ध पर्व-दीपावली
52. भगवान शंकर की अनुकम्पा..
53. समाज की प्रतिष्ठा जरूरी व सर्वोपरि
55. अन्तर्राष्ट्रीय बुर्जुग दिवस.
56. संरक्षक सदस्य-पत्रिका सहित...

प्रचार सामग्री (विज्ञापन)

भारत व्हील
शर्मा एण्ड कम्पनी
एन.आर.जे.इंजिनियर्स प्रा0लि0
ब्लेज इंटरनेशनल

न्यायिक क्षेत्र

सभी न्यायिक मामलों में महासभा के किसी भी पदाधिकारी के विरूद्ध महासभा सम्बन्धी मामले में कानूनी कार्यवाही के लिये न्यायिक क्षेत्र दिल्ली ही होगा।

विनम्र निवेदन

(1) 'जांगिड ब्राह्मण' पत्रिका हर मास की 22 से 27 तिथि तक नियमित रूप से भेज दी जाती है, जो आपको 3-7 दिन में मिल जानी चाहिए।

(2) जिन आदरणीय सदस्यों को पत्रिका नहीं मिल पा रही है वे कृपया अपने सम्बन्धित डाक घर में लिखित शिकायत करें और इसकी एक प्रति महासभा कार्यालय में भी भेजें ताकि महासभा कार्यालय भी अपने स्तर पर मुख्य डाकपाल अधिकारी को यह शिकायत आप की फोटो प्रतियों के साथ भेज सके।

हमारे पास बहुत सारी पत्रिकाएं डाक कर्मचारी की इस टिप्पणी के साथ वापिस आ रही है, कि 'पते में पिता का नाम नहीं', 'इस पते पर नहीं रहता', 'पता अधूरा है', 'पिन कोड' बिना भी पत्रिका वापिस आ रही हैं। यदि आपके पते में उपरोक्त अशुद्धियाँ हैं तो लिखित रूप में महासभा कार्यालय में भेजें ताकि शुद्ध किया जा सके। हम आपको विश्वास दिलाते हैं कि प्रत्येक सदस्य को कार्यालय से प्रतिमाह 22 से 27 तिथि को पत्रिकाएं भेज दी जाती हैं।?

(3) समाज के प्रबुद्ध लेखकों, विद्वानों से निवेदन है कि रचनाओं की छाया प्रति न भेजें, वास्तविक प्रति ही सुस्पष्ट, सुन्दर लेख में लिखकर या टाइप कराकर भेजें। वैवाहिक विज्ञापन एवं इसका शुल्क, अन्य लेख व प्रकाशन सम्बन्धी सभी प्रकार की सामग्री हर माह की 10 तारीख तक महासभा कार्यालय में अवश्य पहुंच जानी चाहिए।

कृपया ध्यान दें- बार बार निवेदन करने पर भी लेखक अपनी रचनाएँ अस्पष्ट हस्तलिखित तथा छोटे से कागज पर भेज रहे हैं। जिससे हमेंश पढ़ने में असुविधा हो रही है। ऐसे लेख प्रकाशित नहीं हो पाएंगे

(4) आपसे यह भी निवेदन है कि प्रत्येक रचना के अन्त में यह घोषणा अवश्य करें कि यह रचना मेरी मौलिक रचना है और अभी तक कहीं प्रकाशित या प्रसारित नहीं हुई है। यदि किसी अन्य स्रोत से ली गई है तो उसका संदर्भ अवश्य दें। तथा लेख के अन्त में अपना नाम, पता, फोन नम्बर हस्ताक्षर सहित अवश्य लिखें।

(5) पत्रिका के विषय में प्रबुद्ध लेखकों के सुझाव सादर आमंत्रित है।

(6)अस्वीकरण-पत्रिका में प्रकाशित लेखों में लेखकों के व्यक्तिगत विचार होते हैं। महासभा का उनसे सहमत होना आवश्यक नही है। -सम्पादक

इस पत्रिका में अभिव्यक्त विचारों से सम्पादक अथवा महासभा का सहमत होना अनिवार्य नहीं है। इसमें प्रकाशित सभी रचनाओं में अभिव्यक्त विचारों, तथ्यों आदि की शुद्धता तथा मौलिकता का पूर्ण दायित्व स्वयं लेखकों का है।

सामाजिक संस्थाओं में भटकाव

समाज में विभिन्न संस्थाओं की स्थापना राष्ट्रीय, प्रान्तीय जिला स्तर पर लोक कल्याण हेतु स्थापित होती हैं इनमें कुछ धार्मिक, सामाजिक, शैक्षणिक व कुछ अन्य प्रकार से समाज सेवा में जुटी हैं। इनकी स्थापना, आरम्भ में निस्वार्थ भाव से सेवा करने के उद्देश्य पूर्ति हेतु हुई। इसके लिए बड़ी अनुनय विनय के बाद किसी ऐसे सज्जन को बागडोर सौंपी जाती थी जिसके व्यवहार का अनुकरण संपूर्ण समाज, करने में अपनी शान समझता था और वह व्यक्ति (संस्था का मुखिया) तन, मन और धन से यथा योग्य सेवा करता रहता था। न कोई चुनाव था न कोई वोट। समाज के कुछ अग्रणी बंधु सर्वसम्मति से किसी को संस्था का दायित्व सौंपकर, उसका हर तरह से सहयोग करते थे। ऐसा कुछ दशक पहले तक होता आया है। लेकिन जब से चुनाव प्रक्रिया आरंभ हुई है तब से इन संस्थाओं में भटकाव देखने को मिल रहा है। किसी विशेष समाज का जिक्र नहीं है, सर्व समाज में भी विभिन्न संस्थाओं की यही स्थिति है। चुनाव के कारण अच्छा खासा भाईचारा दो भागों में बंट जाता है। एक पक्ष और दूसरा विपक्ष। लोकतंत्र की विशेषताओं में विपक्ष का होना अति महत्वपूर्ण, सदियों से, माना जाता रहा है। मध्य युग के भक्ति काल में भी महा संत कबीर जी ने लिखा है:-

निंदक नियरे राखिए, आंगन कुटी छवाय।
बिन पानी, साबुन बिना, निर्मल करे सुभाय

अर्थात जो आपको आपकी त्रुटियों से सचेत करता रहे, ऐसा निदंक (विपक्षी) पास रखिये। लेकिन अब विपक्ष ने अपका धर्म बदल लिया है। वह संस्था के पदाधिकारियों का सहयोग की अपेक्षा विरोध करना ही अपना उद्देश्य मान बैठा है। पक्ष और विपक्ष विद्युत के दो तारो नेगेटिव, पॉजीटिव (ऋणात्मक और घनात्मक) रूप में होते हैं। इन दोनों के बिना न बल्ब जलेगा, न कोई अन्य विद्युत उपकरण कोई काम करेगा। इन दोनों के उचित मिलन से बहुमंजिली इमारत भी जगमगा उठती हैं। लेकिन दोनों के अनुचित रूप से मिल जाने पर भंयकर आगजनी होकर अनेक प्रकार से जन धन का विनाश हो ता है। इसी प्रकार अपनी पृथ्वी के भी दो भाग है। उत्तरी गोलार्ध और दक्षिणी गोलार्ध। दोनों अलग-अलग होते हुए भी एक भूमध्य रेखा पर मिलकर पृथ्वी के रूप का निर्माण करते है। उपरोक्त दोनों उदाहरणों में अलग-अलग स्वरूप होते हुए भी उनका डीएनए एक ही है। इसी प्रकार पक्ष और विपक्ष में बंटे हुए भी हमारा डीएनए (आनुवांशिक गुण सूत्र) एक ही है। समाज उस जल भंडार की तरह होना चाहिए

जिसमें लाठी मारने से दो भागों में बंट तो जाता है। लेकिन कुछ क्षणों में फिर वापिस अपने स्थान पर आकर पहले वाला वास्तविक रूप प्राप्त कर लेता है। रात और दिन के बीच में एक पतली सी क्षणिक रेखा होती है। जो दोनों को अलग-अलग कर देती है, लेकिन सदैव के लिए नहीं। यह रेखा भी विलुप्त होकर दिन रात का भेद खत्म कर देती है। आइयें हम सब मिलकर उपरोक्त प्राकृतिक उदाहरणों का अनुसरण करके अपनी विद्वत्ता का परिचय दें। ताकि अपनी राष्ट्रीय संस्था के उद्देश्य की पूर्ति हो सकें।

ऐसा भी हुआ है एक बार श्रीमती इंदिरा गांधी के प्रधानमंत्रित्व में विपक्ष के नेता श्री अटल बिहारी वाजपेयी को भारत का प्रतिनिधित्व करने हेतु संयुक्त राष्ट्र संघ में भेजकर अद्वितीय उदाहरण पेश किया था। वहां पक्ष और विपक्ष का प्रश्न ही भुला दिया गया था। लेकिन कुछ ज्यादा पढ़े लिखे, अधिक महत्वकांक्षी, महा स्वार्थी माननीयों ने उस प्रथा को आगे नहीं बढ़ने दिया। यही कारण है हमारी सर्वोच्च संस्था (संसद) को साल-साल भर केवल विरोध के लिए विरोध करके कार्य सम्पन्न नहीं करने दिया जाता और व्यर्थ में लाखों करोड़ो का धन स्वाहा कर दिया जाता है।

एक बार भीष्म जी क्रोध में भरकर विदुर के घर गये। और छूटते ही पूछने लगे कि अरे विदुर मेरे द्वारा सिखाई गई राजनीति अब मुझ पर ही प्रयोग की जा रही है। मुझें अबतक तुमने नहीं बताया कि पांडव कहां है। विदुर ने बड़े आदर से उत्तर दिया, तात्श्री, आपने मुझें आदर्श राजनीति सिखाई थी जिसमें झूठ-फरेब, छल-कपट नाम मात्र भी नहीं था। आज उसका स्वरूप बदल गया और उपरोक्त सभी दुर्गुण वर्तमान राजनीति में आ चुके हैं।

यही कारण है कि सदियों से चली आ रही संस्थाओं का बंटाधार हो गया है। हमारे अनपढ़ बुर्जगों ने सात्विक विचारधारा से उनके द्वारा स्थापित संस्थाओं को शिखर पर पंहुचा कर, उसके उद्देश्य की सफल पूर्ति की है। आज बहुमत से चुने हुए अधिकारियों की पदाधिकारियों की योग्यता पर छींटाकशी पद प्राप्त करने से पहले ही आरंभ हो जाती है। जिसे वे लोग करते है जो अपने आप को सबके सामने पढ़ा लिखा और शिक्षित कहते फिरते है। अक्षर ज्ञान शिक्षित होने का प्रमाण नहीं है। बीए, एमए करने से ज्ञानी नहीं बन जाता, सत्तकर्मो से ज्ञानी कहलाया जाता है। पढ़ने के साथ-साथ कढ़ना भी जरूरी हैं। यदि हम में समाज की सच्ची सेवा भावना है तो आइये कुछ समाज की भलाई के कार्य कर के समाज में स्वयं को स्थापित करें। ताकि भविष्य में समाज आपकों ही अपना मार्गदर्शक स्वीकार करलें।

पक्ष और विपक्ष का भेदभाव भुलाकर चयनित पदाधिकारियों का सहयोग करें। उनको कुछ करने का अवसर तो दें। जब उन्हें कुछ करने ही नहीं दिया जायेगा, तो कैसे पता लगेगा

कि वे ठीक है या गलत। गलती करने पर उन्हें सचेत करें और उचित कार्य करने पर उनकी सराहना करें।

हमें संस्था के कार्यालय की अपेक्षा समाज में रहने वाले व्यक्तियों की प्रगति हेतु ध्यान केन्द्रित करना चाहिए। अर्थात अर्जुन की तरह चिड़िया की आंख ही दिखाई देनी चाहिए, न कि पेड़ पत्तें, टहनी सब कुछ। जो अपने आपको बुद्धिमान तथा दूसरों का अज्ञानी समझता है वहीं सबसे बड़ा अज्ञानी होता है। ऐसा शास्त्रों में लिखा है, सुनते आये है। जो पदाधिकारी संस्था हेतु अच्छा कार्य करते हैं समाज उनको पुनः अवसर देता है। जो नहीं करते, उनकों नकार दिया जाता है। ऐसा हम सभी देखते हुए आये हैं फिर भी हम समझ क्यों नहीं पाते हैं। यह विचारणीय विषय हैं। ऐसा तो नहीं है पहले संस्था पदाधिकारी अपनी जेब से पैसा खर्च करता था लेकिन आज इसके विपरीत तो नहीं हो रहा हैं क्योंकि संस्था के पदों की प्राप्ति हेतु चुनाव में, सदस्य लाखों करोड़ो रूपये खर्च किस लिये करते हैं। इस खर्च किये गये पैसे की भरपाई कैसे होती होगी। यह विचारणीय विषय अवश्य है।

सम्पूर्ण समाज में व्यक्ति दो आवेशों से आवेशित है। सकारात्मक और नकारात्मक। सकारात्मक व्यक्ति को गिलास पानी से आधा भरा हुआ दिखाई देगा जबकि नकारात्मक आवेशित उसे आधा खाली ही बताएगा। सकारात्मक पहले बोलता है फिर तोलता है नकारात्मक पहले बोलता है फिर तोलने का प्रयत्न करता है और स्वयं में उलझ कर रह जाता है।

हमारा जीवन छोटा सा है, इसमें कुछ ऐसा कर चलें कि लोग, सदैव हमारा अच्छे व्यक्ति के रूप में स्मरण करें न कि बुरे रूप में। कोई भी कार्य असंभव नहीं है, कोई भी समस्या ऐसी नहीं है जिसका हल न हो सके। कोई भी कार्य ऐसा नहीं है जिसे मानव न कर सकता हो। जब समुद्र की सतह पर मानव निवास हेतु बस्ती बसाई जा सकती है, तो संस्थाओं को एक जुट होकर, आपसी भाईचारे से प्रेमपूर्वक क्यों नहीं चलाया जा सकता? कौन कहता है आकश में छेद नही हो सकता, तबीयत से एक पत्थर तो फेंक कर देखो। परिश्रम से कार्य सिद्ध होते हैं मन में सोचने से नहीं। कहा भी है:- **उद्यमेन हि सिध्यन्ति कार्याणि न मनोरथैः**

न हि सुप्तस्य सिंहस्य प्रविशन्ति मुखे मृगाः।

अर्थात महा बलशाली शेर को भी परिश्रम करने पर शिकार मिलता है। मुख खोले रखने से शिकार स्वयं उसके मुंह में प्रवेश नहीं करता। आइये सद्बुद्धि का प्रयोग करके पक्ष विपक्ष मिलजुल कर संस्थाओं के भटकाव को रोकने का प्रयत्न करें। हमारे जीवन का सार प्रेम-प्यार ही होना चाहिए। नहीं तो लोग हिरण्य कश्यप, विभीषण और जयचन्द को भी याद कर लेते हैं।

सम्पादक- ओमप्रकाश सैवाल

॥ श्री विश्वकर्मणे नमः ॥

(रजि. नं. : एम -27/ 1919)

अखिल भारतीय जांगिड ब्राह्मण महासभा, दिल्ली

प्रधान कार्यालय : 440, हवेली हैदर कुली, चाँदनी चौक, दिल्ली–110006

नेमीचन्द शर्मा (जाँगिड)	अनिल एस. जाँगिड	सोमदत्त शर्मा (जाँगिड)
प्रधान	महामंत्री	कोषाध्यक्ष
मो. - 98252 31894	मो. - 90158 15597	मो. - 98111 31031

क्रमांक : अ. भा. जा. ब्रा. म. / 21-22/1001 दिनांक : 21/10/2021

आम सूचना

आदरणीय समाज बंधुओं

सादर नमस्कार !

आप सब को सादर सूचनार्थ प्रेषित है कि जिस किसी भी समाज बंधू के पास 18 जनवरी 2021 से पहले की कोई रसीद बुक है तो उसे तत्काल महासभा के दिल्ली कार्यलय में जमा करवाने का कष्ट करें !

पहले भी इस बारे में कई आग्रह किये जा चुके हैं लेकिन कुछ सदस्य इस तरफ़ कोई गंभीरता नहीं दिखा रहे!

महासभा कार्यकारिणी के निर्णयानुसार पुराणी रसीद बुक्स अमान्य घोषित की जा चुकी हैं और इन अमान्य रसीदों पर किसी भी प्रकार की राशि एकत्र करना गैर क़ानूनी है !

आप से पुनः आग्रह है कि अपने पास रखी रसीद बुक्स का मय राशि हिसाब बनाकर जल्द से जल्द महासभा कार्यलय में भिजवाने का कष्ट करें!

साथ ही ये भी संज्ञान में आया है कि कुछ जिला सभाओं ने अपने नाम से रसीद बुक्स बनवा कर चंदा एकत्र किया है जो की **महासभा संविधान की धारा 12 विशेष नियम के उपनियम (11) का उल्लंघन है** व आर्थिक अपराध की श्रेणी में आता है !

अतः इस प्रकार कि भूल करने से बचें एवं आमजन को इस बारे में जागृत भी करें कि " **अखिल भारतीय जांगिड़ ब्राह्मण महासभा ,दिल्ली** " के अलावा अन्य किसी भी संबंधित प्रदेश, जिला ,तहसील ,शाखा सभा को अपने नाम से अलग रसीद बुक छपवाने का अधिकार नहीं है और ऐसा करना कानूनन गलत है !

पुनः आप सब से सहयोग की अपील के साथ कि जल्द से रसीद मय राशि महासभा कार्यलय में अति शीघ्र जमा करवाएंगे !

आप सबको मंगलकमाएँ !

सादर आपका

अनिल एस. जांगिड़

राष्ट्रीय महामंत्री

नाशवान् पदार्थो से प्रीति क्यो?

हम सभी जानते है कि संसार में एक प्रभु को छोड़कर जितनी भी भौतिक वस्तुए हैं वे सभी नाशवान् हैं वे चिर स्थायी नहीं हैं फिर भी हम इन नाशवान् पदार्थो से इतनी प्रीत क्यों करते हैं। यह हमारी भूल का परिणाम है, समझ का परिणाम है। हां स्वयं को एवं भौतिक वस्तुओं को स्थायी मान बैठते हैं और उन पर अपना अधिकार कर उनसे प्रीति जोड़ लेते हैं। हम सीधे और सरल कार्य ईश्वर भक्ति को तो कठिन मानते है और भौतिक वस्तुओं के संग्रह को सरल मानते है इसलिए उनके संग्रह में जुट जाते है।

हम यह निर्णय नहीं कर पाते कि नाशवान् जड़, अनित्य पदार्थो की प्राप्ति से कौन सी उन्नति कर लेंगे? नित्य सत्य प्रभु की प्राप्ति में जुटे तो यह हमारी वास्तविक शूरवीरता होगी। हम प्राय: यह विचार नहीं करते कि नाशवान् पदार्थो का आश्रय कितने दिन टिकेगा? ये कब तक साथ देंगे? धन बैंकों मे रह जायेगा। पुत्र, पत्नि, मकान सब यहीं रह जायेंगे हर शरीर चिता में जलकर राख हो जायेगा किन्तु नाशवान् पदार्थो के संग्रह के लिए जो झूठ-कपट पाप किये है वे अन्त:करण में जमा होकर साथ चलेगें। फिर नरक में भीषण यम यातनाएं प्राप्त होगी।

इसलिए हमें समय रहते हुए सचेत हो जाना चाहिए। नहीं तो पछतानें के अलावा कुछ नहीं बचेगा। संसार में कोई किसी का नहीं है। सभी मतलब के साथी है। वक्त पड़ने भगवान ही काम आ सकते है।

इस शरीर के रहते रहते ही अपने उद्धार के लिए प्रयत्न कर लेना चाहिए। ये विषय-भोग तो पशु योनियों में भी हो जायेंगे।

शास्त्रों में प्रभु प्राप्ति के भिन्न-भिन्न उपाय बताए गये हैं। कर्म, योग, ज्ञान, भक्ति ये प्रभु प्राप्ति के सर्वश्रेष्ठ मार्ग है। विशेषकर भक्ति के मार्ग पर चलकर। परमतत्व को प्राप्त करके ही विश्राम लेगें। तभी मानव की मानवता है। तभी मनुष्य जीवन की सार्थकता है।

रोहिताश्व जांगिड से.नि.वरि.अध्यापक, 7727838999

कदर करना सीख लो
ना ही जिन्दगी वापिस आती है
और ना ही लोग

महान कलाकारों और शिल्पकारों को सम्मान दिलवाना सर्वोच्च प्राथमिकता

मुझे विगत दिनों अ0भा0जां0ब्राह्मण महासभा द्वारा आयोजित महासभा के पदाधिकारियों के शपथ ग्रहण समारोह में शामिल होने का सुअवसर प्राप्त हुआ। मुझे पहली बार इस बात का अहसास हुआ कि जांगिड़ समाज में एकता और भाईचारे की भावना बलवती है और इसी भावना को आत्मसात करके ही एकता के सूत्र में बांधने का काम किया जा सकता है।

इस शपथ ग्रहण समारोह में महासभा के 114 वर्षो के इतिहास में पहली बार विभिन्न प्रदेशों की सांस्कृतिक परम्पराओं और विरासत को एक सूत्र में बांधने का स्तुत्य प्रयास किया गया जहां पर देश के कोने-कोने से 20 से अधिक प्रदेशों से आए प्रदेशाध्यक्षों ने अपनी सहभागिता सुनिश्चित करके समारोह को चार चांद लगा दिए। इस सबका श्रेय गया है। सदाशयता, सादगी और सरलता की प्रतिमूर्ति अ0भा0जां0 ब्राह्मण महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री नेमीचंद शर्मा और झूझारू प्रवृत्ति के धनी महामंत्री श्री अनिल एस. जांगिड़ को, जिन्होंने इस समारोह को राष्ट्रीय स्तर का बनाने का सद्प्रयास किया और इस यज्ञ को सफल बनाने का दायित्व संभाला।

जांगिड़ समाज के दानवीर और मानवीय संवेदनाओं की प्रतिमूर्ति श्री सत्यनारायण जांगिड, जिन्होंने ने अपना कृषि फार्म हाउस समाज को समर्पित करके आत्मीयता का परिचय दिया और सफल समारोह के दायित्व का कुशलता पूर्वक निर्वहन करके गरिमा हासिल की है। समारोह की गरिमा को चार चांद लगाने का काम किया माननीय लोकसभा अध्यक्ष श्री ओम बिड़ला ने, जिन्होंने अपने ओजस्वी उद्बोधन में जांगिड़ ब्राह्मण समाज के प्राचीन वैभव और इसकी गौरवशाली महान परम्पराओं का उल्लेख करते हुए इस समाज के अतीत, वर्तमान और भविष्य में शिल्पकला के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए भूरि-भूरि प्रशंसा की और कलात्मक अभिव्यक्ति के माध्यम से देश को गौरवान्वित करने का सार्थक प्रयास करने का संदेश दिया।

मुझे भी इस अवसर पर अपने विचार व्यक्त करने का सुअवसर प्राप्त हुआ। मेरा सदैव से ही यह मान्यता रही है कि देश के उन मूर्धन्य कलाकारों को उनका उचित स्थान दिलवाया जाए, जिसके वे वास्तविक रूप से अधिकारी हैं। इसके पीछे कारण जो भी रहे हो, मैं उन कारणों में नहीं जाना चाहता हूं, लेकिन एक बात निश्चित है कि देश के वैज्ञानिक सोच और कलात्मकता के उत्कृष्ट उदाहरण विशाल भव्य प्रसाद, ऐतिहासिक स्मारक और हमारे देश ही अपितु विदेशों में भी अमूल्य धरोहरों का निर्माण करने वाले महान कारीगरों और शिल्पकारों को मान-सम्मान दिलवाना मेरी सर्वोच्च प्राथमिकता है।

एक सांसद होने के नाते मेरा यह सर्वोच्च कर्तव्य है कि जिस समाज से मेरा सम्बन्ध है । उसकी गरिमा और प्रतिष्ठा को द्विगुणित कर सकूं और उन शिल्पकारों और कलाकारों को उचित सम्मान दिलवा सकूं, जो अपनी बेजोड़ कला का प्रदर्शन करने के पश्चात कहीं गुमनामी के अंधेरे में खो गए हैं। यही कारण था कि मैंने राज्य सभा में दिए गए अपने पहले उदबोदन में ही, अजन्ता अलोरा की गुफाएं, कोणार्क का मन्दिर, खुजराहों के भीत्ति चित्र, चार मीनार, कुतुब मीनार जैसी धरोहर और देवी देवताओं की भव्य प्रतिमाएं और आदमकद मूर्तियां, अपने आप में एक गौरवशाली इतिहास समेटे हुए हैं। इस गरिमामय इतिहास को संजोकर रखने और उन महान कलाकारों को मान सम्मान दिलवाने का हर संभव प्रयास किया जायेगा ताकि उनकी पहचान को अंकित किया जा सके। इस दिशा में भविष्य में सकारात्मक प्रयास करने की हर संभव कोशिश की जाएगी।

मैं समाज की एकता और आपसी भाईचारे की भावना को बढ़ावा देने का सदैव ही समर्थक रहा हूं और हमेशा मेरा यह प्रयास भी रहा है और यही कारण है कि परमात्मा की असीम अनुकम्पा से मैंने सदैव ही यथासंभव प्रयास किया है कि मैं बिना पक्षपात और भेदभाव के राजनीति और पार्टी से हटकर, मेरे से समाज के लोगों के लिए जो कुछ भी बन पड़ेगा, उस दायित्व को मैं पूरा करने का हर संभव प्रयास करुंगा।

कोट पुतली में आयोजित समारोह जांगिड समाज को एकता के सूत्र में बांधने के लिए एक मील का पत्थर सिद्ध होगा और मुझे पूरा भरोसा और विश्वास है कि इस प्रकार के भविष्य में समारोह के सफल आयोजन से देश में जांगिड़ समाज में एक क्रांति का सूत्रपात होगा। इस समारोह में विभिन्न प्रदेशों से आए प्रदेशाध्यक्षों से रुबरु होने का सुअवसर भी प्राप्त हुआ जिससे पता चलता है कि जांगिड़ समाज के लोगों ने अपने परिश्रम, लग्न और मेहनत से एक विशेष पहचान बनाई है।

मैं जांगिड़ समाज के लोगों से और विशेषकर बुद्धिजीवियों से विनम्र निवेदन और आग्रह करता हूं कि समाज उत्थान में आपसी वैमनस्य की भावना को तिलांजलि देकर एक नए समाज के निर्माण के लिए आगे बढ़ कर अपना बहुमूल्य योगदान दे। समाज का इतिहास भविष्य में स्वर्ण अक्षरों में लिखा जायेगा और आप सब लोग इस महायज्ञ में आहूति डालने वाले महानायक होंगे। ऐसा, मुझे पूर्ण भरोसा और विश्वास है। आज समय बदल चुका है, जांगिड़ समाज के युवाओं में एक नई चेतना और विशेष जागृति आई है उनको मार्गदर्शन की जरूरत है जिससे वह नई नई चुनौतियो का सामना करते हुए अपना रास्ता स्वयं ही प्रशस्त कर सकें।

राम चन्द्र जांगड़ा, सांसद राज्य सभा

जियों और जीने दो

जियो और जीने दो यह उद्घोष नगर निगम द्वारा वितरित किए गए वृक्ष रक्षकों (Tree Gaurd)पर उल्लेखित है मैं और मेरे निकट दुआरी ईश्वर सिंह जिंदल सेवानिवृत्त शिक्षक ने अबकी बार दशहरा रावण दहन ना करके वृक्षारोपण से मनाने का निर्णय लिया और एक वृक्ष रक्षक की जीवनदायिनी वसुंधरा पर स्थापना के साथ-साथ एक अशोक वृक्ष के शिशु रूप को मां पृथ्वी के चरणों में स्थापित कर दिया जो चींटी से लेकर हाथी तक प्रत्येक जीव वनस्पति पादप तरु जीवन हेतु भोज्य पदार्थों का उत्तरदायित्व संभाल ले हुए हम दोनों की आयु लगभग 7 दशक पार कर चुकी है फिर भी समाज हित कुछ कर जाने की तमन्ना इन वृद्ध शरीरों में कुलांचे अवश्य भर रही है स्वामी महावीर जैन द्वारा उद्घोष ''जिओ और जीने दो'' की सार्थकता हेतु जनमानस आज अन्य जीवो के जीवन के रक्षण हेतु क्रियाशीलता को अपने से विमुख नहीं होने दे रहा है इसी परिप्रेक्ष्य में बिश्नोई समाज ने अनूठा उदाहरण प्रस्तुत करके केजरी नामक वृक्षों की रक्षा हेतु उनके तनों को आलंगन करते हुए शरीर के कुल्हाड़ी से टुकड़े करवा डाले, मगर उन मरू भूमि के जीवन रक्षक पेड़ों को आंच नहीं आने दी। यह प्रथा आज भी उसी तरह प्रचलन में है घरों में चूल्हों के पास वध प्रतिबंधित काले हिरणों को कुलांचे मन मोह लेती हैं। उनकी उसी प्रकार पालना की जा रही है जिस प्रकार अपने शिशुओं की। स्वामी जी के जन कल्याण चिंतन ने समाज को हिंसा रहित दशा और दिशा मार्ग को स्थापित करके देश को सकल संसार में सर्वोपरि बनाने का लक्ष्य निर्धारित किया था। सदियों पहले अहिंसा का पाठ पढ़ाने वाले स्वामी ने ना केवल जीवों बल्कि वनस्पति वर्ग को भी जीने का अधिकार देकर अपनी महानता पूज्यनीयता को स्थापित किया है। इस मृत्युलोक में सब कुछ शत-प्रतिशत उचित या अनुचित नहीं होता है जहां पर प्रत्येक वस्तु, सिद्धांत नियम प्रथा के लोम का विलोम भी स्थाई भाव से अस्तित्व में है। सुख का दु:ख, जीवन का मृत्यु, अच्छे का बुरा, विशाल का सूक्ष्म, सरल का कठिन, ठंड का गर्म और गर्म का ठंड विलोम विद्यमान है। जहां दयालुता अपना परचम लहराती है वही निर्दयता भी अपना कहर बरपाती हुई देखी जा सकती है। वर्तमान में हरियाणा दिल्ली बॉर्डर पर हिंसा का तांडव नृत्य हम सब ने देखा है एक अकेला ऐसा व्यक्ति अनेक दयाहीन हत्यारों (बूचड़ों) से भी तत्काल मृत्यु के लिए गिड़गिड़ा रहा लेकिन मनुष्य भेषी राक्षसों ने पहले हाथ पैर काटकर तिल-तिल मरने पर विवश कर दिया। उस समय उसकी मनोदशा का अंदाजा उसी तरह लगाया जा सकता है जब हमारे पूजनीय गुरु रामदास जी को उबलते तेल के कड़ाहे में सिर के बल इंच इंच करके डुबोया जा रहा था। उन्हीं के शिष्य आज किसी जीवित व्यक्ति पर तेल छिड़क कर किसी के कभी हाथ कभी पैर काटकर खुशी

से उछल कूद कर रहे हैं। हम विदेशी आतत्ताई-आक्रांताओं, चंगेज खान, सिकंदर, औरंगजेब आदि के किए हुए अत्याचारों को तो कोसते रहते हैं, मगर स्वयं आज क्या कर रहे हैं क्या यह भी सोचा है? हरियाणा दिल्ली सीमा पर जलते हुए जीवित शरीर व कटते हुए मानव अंगों की वेदना को, उस पीड़ा को जीवित व्यक्तियों ने अंतिम सांस तक कैसे सहन किया होगा? हिंसा के एक तांडव रूप की जरा कल्पना कीजिए। हमारे दसों गुरूओं, ऋषि-मुनियों ने धर्म शास्त्रों में ऐसा कहीं नहीं लिखा है। क्या हम धर्म विरुद्ध नहीं हो चले हैं? यह धार्मिकता का दिखावा पाखंड नहीं तो क्या है? हम अंदर से कुछ और बाहर से कुछ और हो गए हैं, एकदम बैहरूपिया?

अहिंसा प्रवर्तक स्वामी जी ने हिंसा को फैलाने के अनेक रूपों की व्याख्या की है हिंसा विचारों से, शब्दों से, संकेतों से भी कुछ तथाकथित अल्पसंख्यकों द्वारा फैला कर भाईचारें में विष फैलाया जा रहा है। जिनमें कोवैसी बेउद्दीन आदि आज यही कार्य करके स्वयं को एक विशेष समाज का हितैषी सिद्ध करने के प्रयत्न में हैं। वह खुलेआम हिंसा प्रचार में लगे हुए हैं और अहिंसावादी मौन हैं या यह उनकी बेबसी है, जो उनको समूल विनाश की ओर ले जा रही है। सारा समाज ही भ्रमित हो रहा है बिगड़े बिगड़े मेरे सरकार नजर आते हैं घर की बर्बादी के आसार नजर आने लगे हैं। हम इस अल्पकालिक जीवन को कहां ले जा रहे हैं। आओ स्वयं जिएं और दूसरों को जीने दें। किसी को संबल न दें सके तो उनकी टांग भी ना खींचे। सर्व सुख दायिनी मां वसुंधरा को पादप, तरु, कुसुम, लताओं द्वारा श्रंगारित करें। जिससे अधिक से अधिक जीवन वायु (Oxizen), हरियाली, शुद्ध हवा-पानी, शीतल समीर से जीवन सरोवर होकर और चहुंओर खुशी की वर्षा होने लगे।

गोविन्द शरण शर्मा, दिल्ली

जीवन का अन्तिम उद्देश्य मानवता का ही कल्याण होना चाहिए और इसके लिए सत्य एवं शुद्ध आचरण होना चाहिए तभी हमारे जीवन की सार्थकता सिद्ध हो सकती है । कई बार मनुष्य अपने स्वार्थ के वशीभूत होकर मानव मूल्यों की उपेक्षा कर बैठता है। लेकिन प्रभू भक्ति का आशीर्वाद और प्रसाद केवल उसी साधक भक्त को मिलता है, जिस पर सर्वेश्वर दीनदयाल की असीम अनुकम्पा होती है उस मनुष्य की सभी विषय वासनाएं तिरोहित हो कर उसका मन प्रभू के रंग में डूब जाता है और चारों तरफ दिव्य ज्योति का प्रकाश पूंज फैल जाता है।

बचपन से ही संस्कारों की पूंजी को बच्चों के कोमल हृदय में संजोकर रख दिया जाए तो निश्चित रूप से ही उसे ईश्वर का आशीर्वाद प्राप्त होगा और जिससे उसे जीवन में आगे बढ़ने की प्रेरणा मिलती रहेगी। सर्वेश्वर भगवान परमात्मा तो कृपा के अथाह सागर हैं और अपने भक्तों की दीन और सरल हृदय से की गई पुकार सुनकर दौड़े चले आते हैं और अपने भक्तों की विपत्ति और कष्ट दूर करके असम्भव को सम्भव बना देते

जिलासभा सीहोर,म0प्र0, द्वारा जिला जनगणना पुस्तक का अनावरण

अखिल भारतीय जांगिड ब्राहमण महासभा की जिला सभा सीहोर मध्यप्रदेश द्वारा दिनांक 18 सितंबर 2021 शनिवार को जिला जनगणना पुस्तक (जनवरी 2021) का अनावरण महोत्सव महक वाटिका नसरुल्लागंज में रखा गया।

अनावरण महोत्सव में प्रदेशसभा मध्यप्रदेश द्वारा नामांकित मुख्य अतिथियों ने अपनी उपस्थिति प्रदान की। श्री कैलाश जी बड़वाल-इंदौर-महामंत्री-प्रदेशसभा मध्य प्रदेश, श्री मनोहर लाल जी शर्मा-इंदौर-पूर्व अध्यक्ष-जिलासभा इंदौर, डॉ0 श्री रमेश चंद्र विश्वकर्मा नसरुल्लागंज-संरक्षक-जिलासभा सीहोर, श्री मोहन लाल जी शर्मा (राउ)-महामंत्री-युवा प्रकोष्ठ जिला इंदौर, श्री कैलाश जी जांगिड़-इंदौर-संगठन मंत्री-प्रदेशसभा मध्य प्रदेश, श्री नर्मदा प्रसाद जी विश्वकर्मा जी छितगांव मौजी-उपाध्यक्ष-युवा प्रकोष्ठ मध्यप्रदेश की उपस्थिति में अनावरण कार्यक्रम संपन्न हुआ

सर्वप्रथम अतिथियों एवं समाज के बंधुओं को भोजन कराया गया इसके पश्चात अतिथियों का मंचासीन कराया गया, व मंच का संचालन श्री सुरेश कुमार विश्वकर्मा नसरुल्लागंज द्वारा किया गया। अतिथियों, जिलासभा, तहसील सभा एवं उपस्थित समाज के बंधुओं द्वारा भगवान विश्वकर्मा जी की आरती की गई। स्वर विनोद जी खरसानिया एवं साथियों ने देकर आरती की गाई। बाद में अतिथियों द्वारा जांगिड़ ध्वजारोहण किया गया। ध्वज गीत में स्वर विनोद जी खरसानिया एवं साथियों ने दिया। पश्चात अतिथियों को अनोखी लाल विश्वकर्मा अध्यक्ष-जिला सीहोर, लक्ष्मीनारायण विश्वकर्मा-मंत्री-जिलासभा सीहोर, कार्यकारिणी सदस्य गोपाल जी, विनोद जी, राजेश जी (कोषाध्यक्ष) द्वारा रिबिन बेच एवं शॉल तथा श्रीफल देकर सम्मानित किया गया।

अनोखी लाल विश्वकर्मा-अध्यक्ष-जिलासभा सीहोर द्वारा अतिथियों के सम्मान में स्वागत उद्बोधन किया गया। जिलासभा सीहोर द्वारा हमारे प्रदेश महासभा मध्यप्रदेश के सम्मान स्वरूप अध्यक्ष-श्री प्रभु दयाल जी बनेला के नाम सम्मान-पत्र भेंट किया गया जो प्रदेशसभा से प्रतिनिधि के रुप में उपस्थित श्री कैलाश जी बड़वाल-महामंत्री-प्रदेशसभा मध्य प्रदेश को सौंपा गया। दूसरा सम्मान-पत्र परम आदरणीय डॉ0 श्री रमेश चंद्र विश्वकर्मा संरक्षक जिला सीहोर के कर कमलों में सौंपा गया।

इसके पश्चात जिला सीहोर द्वारा तैयार की गई जनगणना पुस्तक (जनवरी 2021) का अनावरण किया गया। जनगणना के कार्य में जिन समाज बंधुओं ने उत्कृष्ट कार्य किया उनको सम्मान स्वरूप स्वयं के छाया चित्र वाली शील्ड अतिथियों द्वारा प्रदान की गई।जो इस प्रकार है

1. श्री सुनील कुमार शर्मा मंडी सीहोर (आकलन एडिटिंग एवं डिजाइनिंग) आपने टंकण का कार्य एवं पुस्तक को भव्यता(आकर्षकता) प्रदान की।

2. श्री लक्ष्मी नारायण विश्वकर्मा लाडकुई-जिला जनगणना प्रभारी जिला सीहोर द्वारा विशेष रूचि लेकर कार्य को पूर्ण कराया।

इसी प्रकार जिन प्रवृष्टि प्रभारियों द्वारा गांव-गांव जाकर बायोडाटा तैयार किया गया वह इस प्रकार है।

1. श्री भूपेंद्र विश्वकर्मा-सीहोर (ग्राम सीहोर सैकड़ा खेड़ी)
2. श्री संदीप विश्वकर्मा-सीहोर (ग्राम बमूलिया, बरखेड़ी)
3. श्री मांगीलाल विश्वकर्मा-झागरिया (ग्राम झागरिया)
4. श्री प्रदीप विश्वकर्मा-सीहोर (ग्राम भैंसाखेड़ी, पीपलनेर)
5. श्री धर्मेंद्र विश्वकर्मा-ग्राम (टाकपुरा, शिकारपुरा)
6. श्री सुंदरलाल विश्वकर्मा-(ग्राम गुराड़ी, खैरी)
7. श्री दिलीप विश्वकर्मा-(ग्राम लाडपुर,सिंहपुर)
8. श्री नर्मदा प्रसाद विश्वकर्मा-(ग्राम छितगांव मौजी, बीजल)
9. श्री रानू (सतीश) विश्वकर्मा- (ग्राम खरसानिया,)
10. श्री जितेंद्र विश्वकर्मा-सेमलपानी (ग्राम सेमलपानी, मेजाखेड़ी बोरखेड़ा)
11. श्री रितेश विश्वकर्मा-नंदगांव (ग्राम नसरुल्लागंज,नंदगांव)

इसी प्रकार पुस्तक के प्रकाशन हेतु समाज के बंधुओं ने आर्थिक सहयोग के रूप में 22 (बाईस)लोगों ने पत्रिका विज्ञापन दिया। उनको सम्मान स्वरूप अतिथियों द्वारा नि:शुल्क पुस्तकें भेंट की गई तथा जिन समाज के बंधुओं द्वारा जनगणना पुस्तक क्रय की गई उनको अतिथियों द्वारा पुस्तक वितरण की गई।

जनगणना पुस्तक अनावरण समारोह में भाग लेने हेतु सीहोर, झागरिया, गुराड़ी, खैरी, सिंहपुर, लाडकुई, छितगांव मौजी, बीजला, खरसानिया, सेमलपानी, मंजाखेड़ी, नसरुल्लागंज, नंदगांव आदि के समाज बंधुओं ने भाग लिया। कार्यक्रम सफल बनाने में लक्ष्मीनारायण विश्वकर्मा-मंत्री-जिलासभा सीहोर, गोपाल विश्वकर्मा, विनोद विश्वकर्मा लाडकुई,(सदस्य जिला कार्यकारिणी जिला सीहोर) मिश्रीलाल विश्वकर्मा-संरक्षक-तहसील सभा नसरुल्लागंज एवं ओमप्रकाश विश्वकर्मा नसरुल्लागंज-कोषाध्यक्ष-तहसील नसरुल्लागंज का विशेष सहयोग रहा।

उसके पश्चात अतिथियों द्वारा अपने उद्‌बोधन में कहा कि यह सराहनीय प्रयास जांगिड़ समाज को जोड़ने का एवं एक सूत्र में पिरोने में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन करेगा। जिसके

लिए सभी समाज सेवी जिन्होंने प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से इस प्रकाशन में अपनी अहम भूमिका निभाई है, उनके प्रति भी हम आभार मानते हुए उनका धन्यवाद करते हैं। इस पुनीत कार्य हेतु जिलासभा सीहोर (मध्यप्रदेश) को मध्य प्रदेश में पहले जनगणना पुस्तक पूर्ण कर अनावरण का गौरव प्राप्त हुआ है। प्रदेशसभा मध्यप्रदेश, जिला सभा सीहोर की इस पुनीत कार्य हेतु हार्दिक अभिनंदन करते हुए आपके इस अनुकरणीय प्रयास के लिए बहुत-बहुत धन्यवाद देते हैं।

तत्पश्चात लक्ष्मीनारायण विश्वकर्मा-लाडकुई-मंत्री-जिलासभा सीहोर द्वारा अतिथियों, समाज के उपस्थित बंधुओं, माता एवं बहनों का आभार प्रकट किया, तथा जनगणना कार्य में जिन समाज के बंधुओं द्वारा प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष, विज्ञापन दाताओं द्वारा जो सहयोग प्राप्त हुआ है उसके लिए जिलासभा सीहोर की ओर से आभार प्रकट करता हूं एवं आशा करता हूं कि भविष्य में इसी प्रकार का सहयोग प्राप्त होता रहेगा।

अंत में सभी ने अपने-अपने गंतव्य स्थान को प्रस्थान किया।

लक्ष्मीनारायण विश्वकर्मा
लाडकुई
मंत्री-जिलासभा सीहोर मध्यप्रदेश
मोबाइल-7354413130

इच्छाओं का परित्याग

जीवन में प्रभु सर्वेश्वर दीनदयाल का सबसे बड़ा भक्त वही है जो अपनी इच्छाओं का परित्याग करके दु:ख और सुख में समरसता बनाए रखता है और विकट परिस्थितियों में भी निराशा नहीं होता है।

एक सच्चा गृहस्थी भी भक्त हो सकता है और इसका सबसे बड़ा उदाहरण अयोध्या के राजकुमार भरत हैं। उनका महान त्याग और श्रद्धा तथा भक्ति ने मानव जीवन में ऐसे उदात्त मूल्यों की स्थापना की है। जो मानव मूल्यों की अमूल्य धाती है। राम की भक्ति के कारण उन्होंने अपनी मां का परित्याग कर दिया। जिसने इच्छाओं का परित्याग कर दिया वह महान है।

जो करुणा निधान परमेश्वर का भक्त होता है वह अपमान और तिरस्कार को सहन करके भी प्रभू भजन के अपने लक्ष्य से कभी भी विमुख नहीं होता है। वह दु:ख को भी प्रभू का प्रसाद

वृद्ध माता-पिता और दादा दादी की सेवा कौन कर सकता है?

दु:खी माता पिता और दादा दादी की सेवा करने की समस्या आज की ज्वलन्त समस्या हैं। आज घर-घर में वृद्ध लोग दु:खी हैं। कोई सम्पन्न बेटा अपने बाप दादा की सेवा नहीं कर सकता है तो उनको वृद्धाश्रम में भेज देता है। कुछ बूढ़े लोग दु:खी होकर अपने आप आश्रम चले जाते है। कुछ लोग अपने बूढे बाप को हरिद्वार भिजवा देते हैं। यह बीमारी ग्रामीण अँचलों में भी आ गई है। बूढ़े बाप या दादा को मकान के बाहरी हिस्से में पोली में बैठा देते हैं। बूढ़ा सेवा के लिए चिल्लाता रहता है, परन्तु आज की संस्कारहीन युवा पीढ़ी कोई सुनाई नहीं करती है। सबसे ज्यादा दुर्दशा उन लोगों की होती है जो विकलांग हैं या पक्षाघात से पीड़ित है। कोमा में पड़े व्यक्ति को देखकर हमारा हृदय दयाद्र हो जाता है। उनको कोई करवट भी नहीं बदलाता है। उनकी पीठ पर घाव पड़ जाते है। घरवाले उनके मरने की माला जपते रहते हैं।

यह स्थिति क्यों बनी? इसके दोषी घरवाले हैं। हमने हमारे बच्चों संस्कार नहीं दिये। बड़े बूढो का मान सम्मान करना नहीं सिखाया। इसलिए युवा पीढ़ी संस्कारहीन हो गई है। बच्चे और किशोर सारे दिन मोबाइल पर खेल खेलते रहते हैं। लड़कियां और बहुएं भी मोबाइल पर उंगलियां चलाती रहती है चाहे घर में दूध उफन जावे, चाहे सब्जी जल जावे। जवान लोग अर्थ प्राप्ति के लिए दौड़ते रहते हैं इसलिए सेवा कौन करें।

वृद्ध लोगों की सेवा कौन कर सकता हैं?

सेवा करने के लिए सेवा करने वाले में मानवीय गुण होने चाहिए। ऐसे गुण उन्हीं लोगों में मिलते है जिनको उनके माता पिता ने संस्कार दिये है। सेवा करने वाले व्यक्तियों में निम्नलिखित गुण होने चाहिए।

(1) श्रद्धावान होना आवश्यक है- श्रद्धा वही रख सकता है जिसके दिल में बूढे बुजुर्गो के प्रति सम्मान है। जो अपने माता, पिता, दादा, दादी को पूजनीय और आदरणीय मानता है।

(2) सेवक आस्थावान हो- हम हमारे आराध्य देव की पूजा अर्चना इसलिए करते है कि हमारे दिल में देव के प्रति प्रगाढ़ आस्था है। जो व्यक्ति नास्तिक है जो भगवान के अस्तित्व को स्वीकर नहीं करता है वह नास्तिक बन जाता है। उसी प्रकार बेटा पोता भी यह समझ लेता है कि पेड़ पौधों को कौन पालता हैं? जानवर भी अपने बच्चों की सेवा करते हैं। इसमें माता पिता ने कौनसी बड़ी बात कर दी है। ऐसे लोग कभी सेवा नहीं कर सकते हैं।

(3) जिस के दिल में घृणा का भाव न हो-वृद्ध की सेवा में वृद्ध को शौच स्नान भोजन आदि करवाना पड़ता है। यानि सेवा करने वाला घृणा रखता है तो वह वृद्ध के समीप ही नहीं

जावेगा। बेचारा बूढ़ा शक्तिहीन होने से क्रियाएँ नहीं कर पाता है। वृद्ध चलते समय लड़खड़ाते है और खाना खाते समय हाथ कंपकपाते हैं। वह क्या कर सकता है? शैय्या पर पड़े वृद्ध की सेवा तो सफाई कर्मचारी की तरह ही होती है। यदि ढ़ंग से सेवा न की जावे तो वातावरण दुर्गन्ध युक्त हो जाता है। दूसरा व्यक्ति पास नहीं बैठ सकता है।

(4) सेवा करने वाला संस्कारवान हो- जिस व्यक्ति में मानवीय गुण होते हैं जिसके आचरण में संस्कार है, वही व्यक्ति माता पिता के प्रति कृतज्ञ हो सकता है। वह तो अपने जीवन में मानवीय गुणों को बढ़ाता है और अवगुणों को छोड़ता है। वह अपने को माता पिता का आत्मज समझता है माता, पिता के ऋण से उऋण होना चाहता है।

(5) जिसके दिल में दया धर्म हो- दया ही धर्म का मूल है। इसमें हमारा कौनसा बडप्पन है कि हमारे माता, पिता, दादा, दादी पीड़ा भोग रहे हैं और हम आनन्द भोग रहे हैं। जिसके हृदय में करूणा प्रवाहित होती है वहीं अपने माता, पिता, दादा, दादी के दु:खों को दूर करने का भरसक प्रयास करता है।

(6) जिसके हृदय में माता पिता के प्रति अटूट विश्वास हो- आध्यात्मिक विचारधारा रखने वाला व्यक्ति यह सोचता है मेरे बुजुर्गो की सेवा मैं करूंगा तो मुझे उनके अन्तस से आशीर्वाद मिलेगा जिस से मेरा कल्याण होगा। मेरे जीवन में सुख, शान्ति और समृद्धि रहेगी। बूढ़े मां बाप को तो घर बैठे तीर्थ मानना चाहिए।

निष्कर्ष- बूढ़े माता पिता और दादा दादी की सेवा करना हमारा परम कर्तव्य है। जो माता पिता हमारा पालन पोषण करते है, हमें शिक्षा दीक्षा दिलवाते हैं रोजगार युक्त बनाते हैं। हमें संस्कार देते हैं हमारे गृहस्थ जीवन की शुरूआत करवाते हैं। हमारे छोटे बच्चों को लाड़ प्यार से रखते हैं उनको कष्ट देना, कष्टों में पीड़ित होते देखते रहना इसे बड़ी धृष्टता क्या हो सकती है? यह निश्चित बात है कि जो बेटा पोता अपने माता, पिता, दादा, दादी को कष्ट देता है उनकी सेवा नहीं करता है, तो उनके बच्चें भी ये सारी बाते देखते हैं और परिणामस्वरूप बुढ़ापे में उनके साथ भी ऐसा ही व्यवहार होता है।

छाजूलाल जांगिड
सेवानिवृत व्याख्याता, घूमचक्कर,
नवलगढ़, मो0- 9461661412

विजयादशमी

विजय दशमी आश्विन शुक्ल पक्ष की दशमी विजयदशमी आश्विन मास के शुक्ल पक्ष की दशमी अक्षय स्फुर्ति का दिवस है। दैवी तथा दानवी प्रवत्ति में संघर्ष तथा दैवी प्रवृत्ति द्वारा दानवी प्रवत्ति पर विजय प्राप्ति का, अनादि काल से अनेक घटनाओं द्वारा संजीवित किया गया यह दिव्य प्रतीक है। विजय की अदम्य प्रेरणा इस उत्सव से प्राप्त होती है सर्व गुणों की समरूप दुर्गा देवी ने इसी दिन आसुरी सामर्थ्य पर विजय प्राप्त की थी। सभी मानवीय मूल्यों को कुचल कर बस द्गुण व सद्प्रवृत्ति को स्थान न देने वाले उन्मत्त रावण को इसी दिन मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम ने रक्त स्नान करवाया था तथा देवी देवताओं को मुक्त किया था। रामलीला तथा दुर्गा पूजा अर्चना इन दोनों उत्सवों को इस विजय शाली इतिहास की पावन स्मृति लोक मानस में बनाये रखने की दृष्टि से ही मनाया जाता है। शस्त्र-पूजन का कार्य-क्रम विजय दशमी का पूर्वार्ध है। इस कार्य - क्रम का संघ कार्य में विशेष महत्व है क्योंकि संघकार्य राष्ट्र की शक्ति का आह्वान उसे संसार के सम्मुख पुनः सामर्थ्यशील राष्ट्र के रूप में खड़ा करने के उद्देश्य से ही कर रहा है। आयुध शक्ति के प्रतीक होते हैं आयुधों की पूजा का अर्थ है जिस का आह्वान किया जा रहा है, उस शक्ति की पूजा। नित्यसिद्ध शक्ति की आवश्यकता है। शक्ति संचय करने का अर्थ युद्ध करने व लड़ने से कदापि नहीं है। भारतीय तत्व ज्ञान के अनुसार जहां शक्ति का प्रयोग अनिवार्य है, वहां प्रयोग न करने वाला कायर है और जहां आवश्यक नहीं, वहां यदि प्रयोग करे तो हिंसक । जब सामान्य व्यक्ति, जीवन में शक्ति का अनुभव करता है, तो राष्ट्र-जीवन में तो उस की आवश्यकता बहुत अधिक है।

राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के लिए विजय दशमी का महत्व अनन्य एवं प्रेरणा-दायी है। इसी दिन सन् 1925 में नागपुर में परम् पूजनीय डॉक्टर केशव राव बलिराम हेडगेवार ने संघ की स्थापना की। पतित, आत्म-विस्मृत तथा आत्म-विश्वास-शून्य हिन्दू राष्ट्र में चैतन्य, आत्म -विश्वास व विजय की आकांक्षा निर्माण कर उस की सिद्धि के लिए, बलोपासना करने के लिए, यह उत्सव 'एक परम्परा प्राप्त' साधन ही है। आज के समय में हिन्दू संगठन की आवश्यकता क्यों है ? एक विचारणीय प्रश्न है। आजादी से पहले इस हेतु जो भी आन्दोलन चलाये गये वे परकीय सत्ता को उखाड़ फेंकने के लिए थे। एक लक्ष्य को लेकर समाज ने संगठित भाव से आजादी प्राप्त की, परन्तु उस समय अंग्रेज विरोध के कारण सम्बन्ध जुड़े थे, स्वतंत्रता व स्वराज्य के 'स्व' शब्द का हमें विस्मरण हो गया था।

यह राज्य किसका है ? शासन किसका है राष्ट्र का अर्थ क्या है ? इस पर विचार नहीं हुआ। आज स्थिति भिन्न-भिन्न प्रान्तों की, भिन्न-भिन्न भाषाओं की हो गई है। ऐसे वातावरण को देख कर सत्य, भावात्मक स्पष्ट ध्येय रखे बिना, राष्ट्र का सुस्पष्ट चित्र नहीं रखा जा सकता

यह अनुभव कर संघ की स्थापना कर ऐसा प्रयास किया गया। हिन्दू राष्ट्र अर्थात् एक विशिष्ट भूमि, उस के प्रति नितांत शुद्ध भावना रखकर स्वयं को उसके पुत्र रूप में मानने वाला समुदाय, जो भविष्य के प्रति समान आकांक्षा रखने वाला हो, संस्कारित हो एवं इस देश के महापुरुष, पूर्वजों को अपने पूर्वज, महापुरुष मानते हो। ऐसा समाज हिन्दू-समाज ही है। भारतीय राष्ट्र जीवन अर्थात् हिन्दू-राष्ट्र-जीवन। इसे ही प्रतिष्ठापित करना स्वातंत्रय का वास्तविक अर्थ है।

शक्ति का आधार क्या है सेना शस्त्र अथवा दल बल। जाहिर है इनमें से कुछ नहीं तो यदि हिन्दू समाज को सुदृढ़, बलशाली बनाना है तो ऐसी सेना सभ्य, सुसंस्कृत, राष्ट्रवादी नागरिक का निर्माण जिस समाज से होता है वह समाज जितना राष्ट्र प्रेमी नीतिमान होगा उस समय संघ निर्माता द्वारा सोची गई यह बात कितनी सार्थक थी इस का प्रत्यक्ष अनुभव होता है।

वास्तविक रीति से राष्ट्र को यदि अपने पैरों पर खड़ा करना है तो स्वाभिमान को जागृत करने और विजयशाली बनाये रखने के लिए समस्त भारत के हिन्दू समाज को एक सूत्र में बांध कर, उस में एकात्मकता की भावना जगाकर, निःस्वार्थ, राष्ट्र-भक्ति सम्पन्न, अनुशासनबद्ध, शक्ति-सम्पन्न समाज खड़ा करना होगा।

ॐ नमोऽस्तुते नमोऽस्तुते नमोऽस्तुते मातृभूमे नमः

सह सम्पादक-मनोहर लाल शर्मा

जीवन में जिसका सच्चिदानन्द, सर्वेश्वर भगवान पर आस्था, विश्वास और भरोसा है।उसको जीवन में कभी भी विकट परिस्थितियों का सामना नहीं करना पड़ता है।जिसने अपने आप को परमात्मा सर्वेश्वर के प्रति पूर्ण रूप से समर्पित कर दिया है समझो वह धन्य हो गया। एक साधक अगर सच्चे मन से आस्था और विश्वास के साथ अपने आराध्य देव परमेश्वर सर्वव्यापी परमात्मा का स्मरण करता है तो, उसकी पीड़ा और वेदना तथा सभी दुःख सहज रुप से ही तिरोहित हो जातें हैं। उसकी अनन्य आस्था ही वह मूल मंत्र है, जिसको आत्मसात करके वह अपने निर्धारित लक्ष्य को हासिल कर सकता हैं।

आस्था, विश्वास और प्रेम वह महान सम्बल हैं, जिनके बल पर वह कोई भी उपलब्धि हासिल की जा सकती है। प्रेम की पराकाष्ठा के बल पर ही भरत ने भगवान श्री राम को अपनी खड़ाऊ देने के लिए विवश कर दिया था।

अनुनय विनय के बल पर ही एक भक्त आध्यात्मिकता रूपी सीढ़ी पर चढ़कर ही,प्रभू की शरणागति प्राप्त कर सकता है जिस दिन प्रभू से विश्वास उठ गया तो जीवन में नीरसता और नकारात्मक शक्तियों का उदय हो जायेगा।

ईश्वर हमें सद्बुद्धि प्रदान करें

ईश्वर सब जीवों का माता-पिता है। जीवो में सबसे श्रेष्ठ मानव है। मानव ही ईश्वरीय व्यवस्थानुसार अपने भोग भोंगते हुए सुकर्म करके मोक्ष प्राप्ति का मार्ग प्रशस्त कर सकता है। भले-बुरे, सत्य-असत्य, दु:ख-सुख, राग-द्वेष, कर्तव्य-अकर्तव्य का विवेक केवल मानव को ही है। ईश्वर कभी नहीं चाहता कि उसकी संतान कष्ट में रहे। मानव स्वयं अपनी विपरीत प्रवृत्तियों से दु:ख पाता है। परिवार, समाज एवं राष्ट्र को भी हानि पहुंचाता है। चारों वेदों में ऋग्वेद पहला तथा सबसे बड़ा वेद है। इसमें 10552 मंत्र हैं। ऋग्वेद के अंतिम अध्याय में 4 मंत्र हैं जिसे संगठन सूक्त भी कहा जाता है। इन 4 मंत्रों में परमात्मा उपदेश करता है कि मानव तू सदैव आपस में मिलकर सुख संपदा बढ़ाकर, ज्ञानी बन कर धन-धान्य व बल से समृद्ध होकर पूर्वजों की भांति अपना दीर्घ जीवन व्यतीत कर।

वेदानुसार प्रेम से मिलकर चलो, सभी ज्ञानी बनो। पूर्वजों की भांति तुम कर्तव्य के मानी बनो। मैं अपने समाज बंधुओं से अपेक्षा करता हूं कि हम सब मिलकर, संगठित होकर, एक साथ आगे बढ़ें तथा प्रगति के पथ पर अग्रसर हो। सब शिक्षा प्राप्त करें, अपनी संतान को अच्छी से अच्छी शिक्षा दिलाने में जी जान से प्रयास करें। कोई अशिक्षित ना रहे, सभी बंधु ज्ञानी बने, संस्कारवान बने। हमारे पूर्वज ईश्वर में अटूट विश्वास रखते हुए कठिन परिश्रम करते हुए, सभी प्रकार के व्यसनों से दूर रहते हुए, अनेक प्रकार की सामाजिक बाधाओं से पार पाते हुए, दैवियें आपदा से जूझते हुए भी संगठित होकर, अपनी पहचान बना कर, धरोहर रूप में हमें प्रेरणास्वरूप महासभा के नाम से पहचान वसीयत रूप में सौंप गए। महासभा हम सब शिल्पियों की मां समान है, मां को कभी भी मिटने नहीं देना यह हम सबकी जिम्मेदारी है।

परंतु वर्तमान परिप्रेक्ष्य में हम अपने पूर्वजों के त्याग और निस्वार्थ भाव को भूल गए हैं। हमारे पूर्वजों ने सेवक बन समाज का उत्थान किया था। पद के लिए कभी संघर्ष नहीं किया। अनेक बाधाओं का सामना करते हुए अपना जीवन जोखिम में डाल भी डाल कर भी समाज का हित किया। उनका एक ही लक्ष्य था समाज की एकता व संगठन बना रहे। वे स्वाभिमान से कहते थे कि हम जांगिड़ ब्राह्मण हैं।जो मांग कर नहीं अपितु अपने ज्ञान-विज्ञान, कला-कौशल, बुद्धि-चातुर्य से समाज व राष्ट्र का भला करते हुए अपने परिश्रम से धन कमा कर स्वाभिमान से सिर ऊंचा उठा कर जीते हैं परंतु अब हम सब भूलकर केवल और केवल निज स्वार्थ, पद लोलुपता एवं झूठी शान के लिए जीना चाहते हैं।लोभ, लालच, व झूठे वादे करके अपनी विचारधारा का गुट बनाकर समाज के भाईचारें को तोड़ते है। पद की तृष्णा इतनी

बढ़ गई है कि बार-बार चुनाव लड़ना चाहते हैं, स्वयं नहीं तो अपने परिवार या साथी को चुनाव जितवा कर कुर्सी के इर्द-गिर्द बना रहना चाहते हैं।

इस प्रकार स्वार्थ से समाज का ताना-बाना चरमरा गया है। आपस में घृणा-गुटबाजी तथा अनेक बुराइयां घर कर चुकी है। हर व्यक्ति प्रधान पद पाना चाहता है। बंधुओं समाज को प्रधानों की नहीं सेवकों की आवश्यकता है। समाज बुराइयों से अटा पड़ा है। समाज को दलदल से निकालना हैं। अत: सेवा करने वालों की आवश्यकता है। भावी पीढ़ी को शिक्षित एवं संस्कारवान बनाना है। संकीर्णता, स्वार्थ एवं लालच से हर तीसरा रिश्ता टूट रहा है। सच्ची बात पहले बताते नहीं, दोहरा जीवन जीते हैं। नैतिकता रही नहीं। हम सब एक ऋषि की संतान है। कोई छोटा कोई बड़ा नहीं हैं। वैमनस्य दूर कर आपस में प्रेमभाव बनाओ। प्रधान तो एक ही होता है उसके पीछे लग जाओ और सेवा सहयोग करो। अभी समय है देखो अहो सौभाग्य तुम्हारे पास खड़ा है।

करना है सो काम, उसी में मन लगा दो।
आत्मा पर विश्वास करो संदेश भगा दो।।

देशराज आर्य पूर्व प्रधानाचार्य
रेवाड़ी, 9416337609

जिस समय एक मनुष्य राग-द्वेष, द्वन्द्व तथा मोह को छोड़ कर भक्ति के मार्ग पर चलने लगता है तो उसमे आध्यात्मिक गुणों का विकास होने लगता है और वह अपने आराध्य देव परमेश्वर के प्रति समर्पित हो कर मोक्ष परायण होने का प्रयास करता है। जो भक्त अधिभूत, अधिदेव और अधियज्ञ सहित वासुदेव का भजन करता है वह नारायण स्वरूप हो जाता है तथा दया, करुणा और दीनता के गुणों को आत्मसात करते हुए साधक अपने आप को धन्य समझने लगता है और अन्त में वह सर्वेश्वर भगवान को प्राप्त कर सकता है।

जो धनवान मनुष्य अंहकार के वशीभूत हो जाता है तो वह धन के बल पर अपने आप को शक्तिशाली और सबसे ताकतवर समझने की भूल कर बैठता है। जैसा की, बाणासुर के साथ हुआ। ब्रह्मा से वरदान पाकर वह अपने आप को अजर और अमर समझने लगा था , लेकिन अन्त में उसको भी अहंकार के कारण, प्राणों से हाथ धोना पड़ा।

यह अकाट्य सत्य है कि जो परमात्मा का सच्चा भक्त है, उसे अनेकों कष्ट और विपदाओं का , सामना करना पड़ता है। लेकिन जिसका विश्वास उन विकट परिस्थिति में भी अडिग रहता है ।उसे कोई भी लालच नहीं डिगा नहीं सकता है। एक सच्चा साधक गरीब व्यक्ति भी करोड़ों के लालच से भी दिग्भ्रमित नहीं होता है और अन्त में वह अपने लक्ष्य को हासिल कर लेता है।

आनन्द का भाव आपके अन्दर विद्यमान है

सुख और दु:ख के उफान और उतार से दूर आनन्द है जिसे शान्ति भी का गया है। आनन्द की अभिव्यक्ति प्रत्येक मनुष्य के भीतर सच्चिदानन्द (सत्-चित्-आनन्द) परमात्मा है, जिसे ब्रह्म भी कहा गया है। हमारे जीवना की त्रासदी है कि हम आनन्द को छोड़कर उसकी पर छाई सुख का पीछा करते हैं जिस कारण हमारे समाज में वैमनस्यता बढ़ रही है।

जीवन का एक कटू सत्य है कि जिस का आप पीछा करेंगे सफलता, धन, प्रतिष्ठा आदि, वह आपकी पहुंच से बाहर निकलती जायेगी। पीछा करने का अर्थ है चोर-सिपाही को खेल शुरू हो जायेगा। अब आपको विविध रणनीतियां बनानी पड़ेंगी और पीछा करते-करते अगर सफलता मिल भी गई तो आनन्द मिलेगा ही, इसकी क्या गारंटी है? अगर सफलता आनन्द सुनिश्चित करती है तो महाभारत के युद्ध में विजयी होने के पश्चात युधिष्ठर के पश्चाताप जन्य विषाद को क्या समझेंगे।

महाभारत में कहा गया है कि लोक में सभी वस्तुओं की प्राप्ति सुख के लिए होती हैं। सुख के तीन स्त्रोत हैं-धर्म, अर्थ, और काम। इसके अतिरिक्त सुख समाधानों का अन्य कोई प्रयोजन नहीं है। मनुष्य सुख जितनी इच्छा करता है, उतना ही दु:ख से बचने की कोशिश करता है। परन्तु सुख और दु:ख आपका पीछा करता है। सारा जीवन इसी चक्र में उलझ कर निरर्थक प्रतीत होने लगता है। दरअसल दु:ख से निवृति असंभव है, इसलिए बौद्ध दर्शन में दु:ख को जीवन का एक आर्य सत्य कहा गया है और न्याय दर्शन में सुख और दु:ख दोनों को वेदना कहा गया है।'अनुकूल वेदनीयं सुखं, प्रतिकूल वेदनीयं दु:ख' अर्थात जो वेदना हमारे अनुकूल है वह सुख है और जो हमारे प्रतिकूल है हमें भली नही लगती, वह दु:ख है। अंततोगत्वा है तो वह वेदना ही।

आनन्द का भाव आपके अंदर विद्यमान है। ऐसे में यह सोचना स्वाभाविक है कि अगर आनन्द का भाव हमारे अंदर है तो फिर इस हताशा से क्यों घिरे रहते हो? मानसिक थकान, उदासी, निरूत्साह क्यों हमारे सहचर बन गये हैं? इसका उत्तर है कि आप किसी भी समय पूर्णता के साथ उपलब्ध नहीं होते है।

हमेशा आप अलग अलग बंटे रहते हैं, यह बंटवारा या तो अपेक्षाओं का होता है या फिर विगत का अपराध बोध और ऐसा करके आप अपने आनन्द भाव में सेंध डाल देते है।

सुखों का भोग करना प्रत्येक मनुष्य की नैसर्गिक प्रवृत्ति है। वास्तव में भोग शब्द का अर्थ सुख के अनुभवों को एकत्र करने की चाह है। वर्तमान समय में हमारी प्रवृत्ति ने

उपभोक्तावादी बना दिया है। हालांकि सुख और दु:ख दोनों ही भोगे जाते हैं।

जहां आप आनंदित होकर जीवन जीते हैं, आप शक्ति से युक्त होते हैं। इसका परिणाम जीवन के प्रति आप का सकारात्मक नजरिया होता है। जिन कार्यो को करने में आपको आनन्द आता है, उन्हें संपन्न करने के लिए आप स्वयं उत्तरदायी होते हैं।

सुख और दु:ख जीवन का संगम है। सुख है वहां दुख और दुख है वहां सुख। तभी तो कहा गया है-

दु:ख में सुमरिन सब करें सुख में करे न कोय।
जो सुख में सुमरिन करे तो दु:ख काहे को होय।।

पूर्व सम्पादक प्रभुदयाल शर्मा, दौसा

सेवा निवृत्ति का परमानन्द

सेवानिवृत्ति का असीम आनंद है बेहतर और अनमोल ।
अपनी कुंठित भावनाओं को सबके सामने व्यक्त करो दिल खोल।। -1
कार्यालय के बन्धन से मुक्त होकर आ गया परमानन्द और हट गए सभी प्रतिबंध।
रोज सुबह उठना और घड़ी से दोस्ती, भाग-दौड़ कर आफिस पहुंचना,
यह था एक विशेष प्रतिबंध ।। 2
अब ना बोस का डर, ना कोई हाजरी का चक्कर, ना ही स्थानांतरण की चिंता,
न ही काटने पड़ेंगे मन्त्रियों के चक्कर।।-3,
अब है ना कोई ए सी आर लिखवाने की चिंता
और न ही अवकाश के दिनों में टूर पर जाने की।
अब मैं स्वछंद हूं, ना कोई चिंता सता रही है,
अनुशासनात्मक कार्रवाई और दण्डित हो जाने की।।-4
अपने दिल की भड़ास निकाल लीजिए और सी एल
और इ एल न देने वाले अधिकारियों को जी भर कोस लीजिए, अब सब कुछ है माफ।
अब ना घड़ी से दोस्ती रहेगी, बदल गए सब अंदाज, प्रभू भक्ति में मस्त रहें,
जिससे आयेगा चेहरे पर नूर, पूजा-अर्चना
और सांसारिक दायित्वों में सामंजस्य बना कर रखना यही होगा सफलता का राज।।-5

पुष्पा रानी, करनाल

आधुनिक युग में परिवार विलुप्त होते हमारे सांस्कृतिक मूल्य

पाश्चात्य सभ्यता और संस्कृति के मोह में आज देश से सांस्कृतिक मूल्यों और विरासत की धरोहर धीरे-धीरे विलुप्त होती जा रही है। आज के जीवन की भागदौड़ में मनुष्य एकाकीपन का दर्द झेल रहे हैं। आधुनिक युग में जहां यात्रा के साधनों में क्रांतिकारी परिवर्तन आया है वहीं मोबाइल फोन और कम्प्यूटर ने भी इस जटिलता को और बढ़ा दिया है। मनुष्य को यहां तक पहुंचने के लिए हजारों वर्ष लग गए और इस आधुनिकता का असर यह हुआ है कि आज मनुष्य में न तो धैर्य है और न ही उसके पास इतना समय। वह परिकल्पना करता है कि कितना भी दुष्कर कार्य हो पलक झपकते ही पूरा हो जाए।

इस विकास यात्रा में आधुनिक विज्ञान के साथ-साथ आवागमन के साधनों ने भी अहम् भूमिका निभाई है। पहले जहां मीलों पैदल चलकर या घोड़ा गाड़ी पर जाते थे और आज यह क्रांति वायुयान से लेकर राकेट लांचर तक पहुंच गई है चंद्रलोक और मंगल ग्रह की खोज जारी है। इसके साथ ही यह भी परिकल्पना की जा रही है कि एक समय ऐसा भी आयेगा कि मनुष्य के किसी अंग में एक ऐसी मशीन फिट कर दी जायेगी जिससे मनुष्य जब चाहेगा वहां उड़ कर शीघ्रता से एक दूसरे स्थान पर पहुंच सके।

एक ओर आदमी के विचारों में सजगता आई है वहीं दूसरी ओर वह पलक झपकते ही एक बटन दबाकर वीडियो कान्फ्रेसिंग के माध्यम से एक मिनट में अमेरिका सहित विश्व के किसी भी कोने में बात कर सकता है। वहीं दूसरी ओर इस विनाशकारी सोच का परिणाम यह हुआ कि हमारे सांस्कृतिक मूल्यों और विरासत पीछे छूटती जा रही है।

संजय धृतराष्ट्र को महाभारत के युद्ध का आंखो देखा हाल दिव्य दृष्टि के कारण ही सजीव चित्रण दरबार में बैठे-बैठे ही सुनाया था । आज मोबाइल ने उस प्राकृतिक संस्कृति को काल्पनिक संस्कृति में बदल कर परिवार के आपसी हितों, सामंजस्य और सहयोग को जो अपूर्णीय क्षति पहुंचाई है, उसकी परिकल्पना भी नहीं की जा सकती ।

एक मोबाइल और कंप्यूटर तथा टेलीविजन के माध्यम से हम दुनिया के किसी भी कोने से जुड़े रह सकते हैं, लेकिन सबसे बड़ी विडम्बना यह है कि वह भद्र पुरुष एक ही छत के नीचे रहने वाले अपने माता-पिता को देख नहीं पाते हैं। आज के युवा के मोबाइल पर अपने यार-दोस्तों की फोटो तो मिल जाएगी लेकिन उसके माता-पिता की फोटो के लिए न तो उस स्क्रीन पर जगह है और न ही उनके दिलों में। जब एक मनोवैज्ञानिक से इस संकुचित मनोवृत्ति के बारे में पूछा गया तो उसने कहा कि पारिवारिक मूल्यों का विघटन ही इसका प्रमुख कारण है। माता-पिता खुद अभाव में रहकर अपने बच्चों का पेट पालते हैं। उनके भविष्य निर्माण में

दिन रात लगे रहते हैं।जो बच्चा अधिक पढ लिख लेता है वह अपने माता-पिता से दूरी बना लेता है, अपितु अपने परिवार से भी कटता जा रहा है।

जो बच्चे शहरों में नौकरी करने जाते हैं, उनके साधन सीमित होते हैं , लेकिन कई बार उनके अभिभावक मिलने चले आते हैं तो उन्हें अपने बच्चों से ही उपेक्षा का शिकार होना पड़ता है। इससे बड़ी विडम्बना और क्या हो सकती है कि जो मां अपने बेटे के लिए रात-रात भर जागकर अपने पुत्र के लिए कठिनाइयां झेलती थी उसको अपने पुत्र के हाथों से कई बार तिरस्कृत होना पड़ता है। इसकी कभी परिकल्पना भी नहीं थी। अत: निराशपूर्ण जीवन जीने को मजबूर हो जाते हैं।

आज के पारिवारिक मूल्यों में अप्रत्याशित गिरावट आई है। एक छत के नीचे रहते हुए भी अपने माता-पिता संतान से मिल नहीं पाते हैं। इसका प्रमुख कारण है मानवीय संवेदनाओं और नैतिक मूल्यों में गिरावट । जिनके माता-पिता साथ है वे बड़े ही सौभाग्यशाली है । परिवारों को टूट से बचाने का एक ही रास्ता है कि हम नैतिक मूल्यों को आत्मसात करते हुए आपस में सामंजस्य बनाए रखें तभी हम अपने जीवन में सफल हो सकते हैं।

सह सम्पादक-मनोहर लाल शर्मा

दोहा- सागर, गागर, नागर

हाथ जोड़ बिनती करते हैं सागर से भगवान!
हमको गंगा जल अब चाहिये, करो कृपा निधान।

गागर भर करके चली, सखियाँ यमुना नीर!
कंकड़ पत्थर मारे राह में, कृष्ण जी खड़े हैं धीर।

नटवर नागर नंद से, बचना है दुष्कर सखी सुजान!
बैठा होगा राह निहारे, नंदलाल मटका फोड़े आंनद में झूमे है
वह कैन्हैया महान !!

अमरनाथ सोनी 'अमर'
9302340662

विदेशों में हरियाणा के लोकप्रिय लकड़ी के कशीदाकारी फ्रेम

लकड़ी की मनोरम और आकर्षक चित्रकारी का नाम सुनते ही हरियाणा के महेंद्रगढ़ जिला के गांव तहलोट का नाम सहज रूप से ही हमारी आंखों के सामने आ जाता है। नारनौल से 12 किलोमीटर दूर निजामपुर को जाने वाले मार्ग पर यह तहलोट गांव आबाद है। इस गांव की कशीदाकारी की गूंज, जांगिड़ ब्राह्मण समाज के उन मेहनतकश और श्रमजीवी लोगों की मेहनत का परिणाम है कि आज इसकी गूंज विदेशों तक सुनाई देती है।

इस गांव की कहानी भी बड़ी लोमहर्षक है। कहते हैं कि किसी साधु के श्राप के कारण यह गांव खाली हो गया था और इस वीरान और सुनसान गांव में लगभग 325 साल पहले राजस्थान के गढ सागर नामक स्थान से जांगिड़ समाज के कुछ लोग यहां आकर बस गए जिसके कारण इस गांव में दोबारा रौनक लौट आई। इस समाज के लोगों का मुख्य पेशा पहले खेती-बाड़ी करना रहा है।

जांगिड बाहुल्य इस गांव में लगभग 500 घर हैं। इस गांव में आज तक सभी सरपंच जांगिड़ समाज से ही बनते रहे हैं। आज कल इस गांव के सरपंच प्रदीप जांगिड हैं जो वर्ष 2016 से कार्य कर रहे हैं।

तहलोट गांव के सरपंच प्रमोद जांगिड़ ने ने बताया कि इस गांव के इतिहास ने पहली बार करवट ली और इस गांव का नया इतिहास लिखने की घटना की शुरुआत हुई। इसी गांव का एक उत्साही युवक मनोहर लाल जांगिड, आजिविका अर्जित करने के उद्देश्य से सन् 1942 में गांव छोड़कर दिल्ली चला गया और उसने वहां पर सिंगर कम्पनी द्वारा बनाए गए कशीदाकारी फ्रेमों को देखकर संकल्प लिया कि वह इस कला में महारत हासिल करेगा।

परमात्मा ने साथ दिया और मनोहर लाल ने अपनी जिजिविषा को मूर्त रूप देने के सिंगर कम्पनी में नौकरी की शुरुआत की और फालतू समय में उन्होंने फ्रेम बनाने का काम भी सीखना शुरू किया और अपनी लगन और मेहनत के परिणामस्वरूप वह कम्पनी द्वारा बनाई जा रही फ्रेम से भी सुन्दर फ्रैमों पर कलाकृति बनाने के कार्य में पारंगत हो गए और इसका परिणाम यह हुआ कि उसने अपने स्तर पर ही इन फ्रेमों का बड़ी-बड़ी कम्पनियों को निर्यात करना शुरू कर दिया और देखते ही देखते उसके भाग्य की तस्वीरें बदलनी शुरू हो गई।

मनोहर लाल जांगिड ने अपने गांव के लोगों को इस कार्य में दक्ष करने का निर्णय लिया और इसी कड़ी में सन् 1972 में उन्होंने दिल्ली के साथ साथ अपने पैतृक गांव तहलोट में भी इन फ्रेमों के बनाने का काम शुरू किया और उसके मार्ग दर्शन में गांव के अधिकतर नवयुवकों ने इस कला में निपुणता हासिल की और इन इकाइयों की संख्या धीरे-धीरे बढ़कर लगभग 125 तक पहुंच गई । जिससे आस पास के हजारों युवाओं को रोजगार के अवसर

प्राप्त हुए। लेकिन समय के बदलाव और नई टैक्नोलॅजी के आगमन के साथ ही इस के निर्यात पर भी असर पड़ा है पहले जहां विदेशों में करोड़ों का निर्यात होता था उसमें भारी कमी आई है और रही-सही कसर लॉकडाउन और कोरोना ने पूरी कर दी है।

आज जहां लकड़ी महंगी हो गई है वहीं कोरोना के चलते विदेशों जैसे दुबई, शारजाह और इराक और इरान जैसे देश में भेजे जाने वाले माल की सप्लाई भी कम हो रही है और इसका सीधा असर इन इकाइयों पर भी पड़ा और जिसका परिणाम यह हुआ कि इनकी संख्या निरंतर कम होती जा रही है। इसके अतिरिक्त कच्चा माल भी दिल्ली से लाना पड़ता है और माल तैयार होने के पश्चात इसकी सप्लाई मुम्बई, कोलकाता, मद्रास और आगरा जैसे शहरों में की जाती है। लेकिन अफसोस की बात यह है कि यह व्यवसाय भी आज कल पूंजीपति लोगों के भेंट चढ़ गया है। जिसका परिणाम यह हो रहा है कि धनाढय लोग कच्चा माल इन इकाइयों को उपलब्ध करवाते हैं और इसके बदले में उन्हें केवल मेहताना मिलता है। इससे होने वाला सारा मुनाफा धनाढ्य लोगों के पास चला जाता है।

हरियाणा सरकार को इस कशीदाकारी फ्रेमों के उद्योग को बचाने के लिए आगे आना चाहिए अन्यथा सभी इकाइयां बर्बादी के कगार पर पहुंच जाएगी। राज्य सरकार द्वारा इन इकाइयों को सब्सिडी प्रदान करके सहायता प्रदान करनी चाहिए । इसके पश्चात वह दिन दूर नहीं होगा कि जब हरियाणा प्रदेश का नाम ही नहीं अपितु इस गांव तहलोट का नाम भी कशीदाकारी के क्षेत्र में विश्व के मानचित्र पर अपनी एक अलग पहचान बनाने में सक्षम हो सकेगा।

उप संपादक रामभगत शर्मा

विचारों को वश में रखिये
वो तुम्हारें शब्द बनेंगे
शब्दों को वश में रखिये
वो तुम्हारें कर्म बनेंगे
कर्मों को वश में रखिये
वो तुम्हारी आदत बनेंगे
आदतों को वश में रखिये
वो तुम्हारा चरित्र बनेगा
चरित्र को वश में रखिये
वो तुम्हारा भाग्य बनेंगे।

मुण्डका में महासभा भवन हेतु दानदाताओं की सूची

श्री रामपाल शर्मा जी, (बैंगलोर)
11 लाख + 1.25 करोड
एक मंजिल निर्माण मे परिवार का सहयोग

श्री कैलाश चन्द्र बरनेला जी,(इन्दौर)
पूर्व प्रधान महासभा
86,00,000/-

श्रीमती कृष्णा देवी शर्मा जी
(पत्नी श्री रामपाल शर्मा जी)
बेंगलुरू 35,00,000/-

श्री भंवर लाल जी कुलरिया
मुम्बई,
31,00,0000/-

श्री एकलिंग जांगिड़ जी, सूरत महासभा भवन में लगने वाले सम्पूर्ण ग्रेनाइट आपकी ओर से देने की घोषणा की।

श्री मीता राम जांगिड जी,
मै.सुमित वुड वर्क्स लि.(मुम्बई)
21,00,000/-

प्रमुख स्तंभ समाजसेवी
श्री रमेशचन्द शर्मा सरपंच जी एवं
श्री सुरेन्द्र कुमार शर्मा जी, दिल्ली
11,51000/-

श्री रविशंकर शर्मा जी,
(जयपुर), पूर्व प्रधान
महासभा 11,00,000/-

श्री ओम प्रकाश जांगिड जी
(सीकर, राजस्थान),
11,00,000/-

श्री लक्ष्मण जी जांगिड
(मुम्बई)
11,00,000/-

श्री लीलूराम शर्मा जी
चेयरमैन, जां.ब्रा.शिरोमणी सभा, दिल्ली
11,00,000/-

श्री गिरधारी लाल जांगिड जी
(मुम्बई)
11,00,000/-

श्री नवीन जी
(जयपुर)
11,00,000/-

श्री दीपक शर्मा जी
(सुपुत्र श्री रामपाल शर्मा जी)
बेंगलुरू 10,21,000/-

श्री अमित शर्मा जी
(सुपुत्र श्री रामपाल शर्मा जी)
बेंगलुरू 10,21,000/-

श्री जगमोहन शर्मा जी
(सुपुत्र श्री रामपाल शर्मा जी)
बेंगलुरू 10,21,000/-

श्री अमरा राम जांगिड जी
दुबई, अंतरराष्ट्रीय अध्यक्ष
महासभा, 5,51,000/-

श्री भंवरलाल गुगरिया जी
(बेंगलुरू)
5,51,000/-

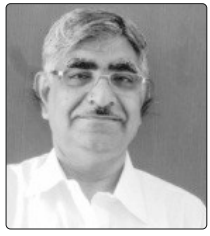

श्री गिरधारी लाल जांगिड
जी (बेंगलुरू)
501,000/-

श्री राजेन्द्र शर्मा जी
(मै.राज.कोचबिल्डर्स,धार)
5,00,000/-

मुण्डका में महासभा भवन हेतु दानदाताओं की सूची

श्री पूनाराम जांगिड जी, (जोधपुर)
5,00,000/-

श्री सीताराम शर्मा जी, (बैंगलोर)
5,00,000/-

श्री श्रीगोपाल चोयल जी एवं श्री आर.एस.चोयल जी श्री महादेव चोयल (जांगिड) चेरिटेबल ट्रस्ट, अजमेर
5,00000/-

श्री सुरेन्द्र कुमार वत्स जी (पूर्व कोषाध्यक्ष, महासभा) एवं श्री दिनेश कुमार वत्स जी, (दिल्ली)
5,00000/-

श्री कांति प्रसाद जांगिड जी (टाईगर) (दिल्ली)
5,00,000/-

श्री प्रभुदयाल शर्मा (वाराणसी)
5,00,000/-

श्री सुनील कुमार शर्मा जी, (चित्तौडगढ)
5,00,000/-

प्रदेशसभा राजस्थान
5,00,000/-

जांगिड वेलफेयर सोसाइटी, यमुना विहार दिल्ली
5,00,000/-

श्री सोमदत्त शर्मा जी नांगलोई कोषाध्यक्ष महासभा, दिल्ली
2,52,151/-

श्री सीताराम शर्मा जी (पूर्व जिला प्रमुख, करौली), दिल्ली 2,51,151/-

श्री महेन्द्र कुमार जांगिड जी, (धारूहेड़ा)
2,51,000/-

श्री रामअवतार जांगिड जी, (जयपुर)
2,51,000/-

श्री बनवारी लाल शर्मा जी (सीकर)
2,51,000/-

श्री सुभाष जी (बोरवेल वाले) (जयपुर)
2,51,000/-

श्री महेन्द्र शर्मा जी, (मुम्बई),
2,51,000/-

श्री मनीलाल जांगिड जी (मुम्बई),
2,51,000/-

श्री सतीश शर्मा जी (नदबई),
2,51,000/-

श्री पूरनचन्द शर्मा, दिल्ली (प्रधान शिरोमणी सभा)
2,51,000/-

सुप्रसिद्ध समाजसेवी श्री प्रकाश शर्मा, दिल्ली
2,51,000/-

मुण्डका में महासभा भवन हेतु दानदाताओं की सूची

श्री बाबूलाल शर्मा जी
(बेंगलुरू)
2,51,000/-

श्री इंदरचंद चांदराम
जांगिड जी, मुम्बई
2,51,000/-

श्री रवि जांगिड जी
(बेंगलुरू)
2,51,000/-

श्री नरेश चन्द्र शर्मा जी
(बेंगलुरू)
2,51,000/-

श्री अशोक जांगड
(नजफगढ़, दिल्ली)
2,51,000/-

श्री किशनलाल शर्मा जी,
(रोहिणी, दिल्ली)
2,51,000/-

श्री शंकर लाल धनेरवा
जी, (जयपुर)
2,51,000/-

श्री सुभाषचंद्र जांगिड जी
(भाईंदर(ईस्ट),ठाणे,महाराष्ट्र)
2,51,000/-

श्री रामकरण शर्मा जी
(फरीदाबाद)
2,51,000/-

श्री प्रहलादराय जांगिड जी
(नांदेड)
2,50,000/-

श्री प्रभुदयाल शर्मा जी
देवास, (मध्य प्रदेश)
2,50,000/-

श्री सुरेन्द्र शर्मा जी,
(अहमदाबाद)
2,50,000/-

श्री संजय शर्मा जी,
(जयपुर)
2,00,000/-

जिलासभा
बाड़ेमर(राजस्थान)
2,00,000/-

श्री योगिन्द्र शर्मा जी
आई पी एक्सटेंशन-अध्यक्ष पूर्वी
दिल्ली जिलासभा 1,53,000/-

श्री देवी सिंह जी ठेकेदार
-करावल नगर-उपाध्यक्ष
अ.भा.जा.ब्रा.महासभा 1,51,111/-

श्री जवाहरलाल जांगिड
जी, उज्जैन (मध्य प्रदेश)
1,51,000/-

श्री राम पाल शर्मा जी
यमुना विहार-उपाध्यक्ष पूर्वी
दिल्ली जिलासभा 1,51,000/-

श्री जीवनराम जांगिड
जी (नागपुर)
1,51,000/-

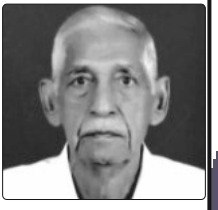

श्री श्रीकृष्ण जांगडा
जी,रानी खेड़ा, दिल्ली
1,51,000/-

(महासभा भवन में एक कमरे
के लिए योगदान)

मुण्डका में महासभा भवन हेतु दानदाताओं की सूची

श्री हरिराम जांगिड जी थाने, मुम्बई
1,51,000/-

श्री जयसिंह जांगडा जी (रिटायर्ड जज)गुरूग्राम
1,51,000/-

श्री विजय प्रकाश शर्मा जी (द्वारका, दिल्ली)
1,51,000/-

स्व.चांद कौर धर्मपत्नी स्व.श्री नाहनाराम जांगडा जी की स्मृति में एक कमरे के लिए 1,51,000/- का योगदान डॉ.शेरसिंह जांगडा प्र.अ.हरियाणा एवं उनकी धर्मपत्नी डॉ.शील जांगडा द्वारा प्रदान किया गया

श्री बाबू लाल शर्मा जी, (इन्दौर, मध्य प्रदेश)
1,51,000/-

श्री किरताराम छड़िया जी बेंगलूरू
1,51,000/-

श्री वीरेन्द्र शर्मा जी (शामली)
1,51,000/-

श्री ओमप्रकाश शर्मा जी (जीओजी मार्बल जयपुर)
1,51,000/-

श्रीमती उर्मीला जांगिड पत्नी श्री लक्ष्मीनारायण जी गुरूग्राम 1,51,000/-

कैप्टन श्री हेमराज जी कोटपूतली
1,51,000/-

श्रीमती ब्रह्मो देवी धर्मपत्नी श्री नाथूराम जी शर्मा, दिल्ली 1,51,000/-

श्री कृष्ण कुमार शर्मा जी द्वारका, दिल्ली
1,51,000/-

श्री सत्यनारायण शर्मा जी पैरामाउंट इंजीनियर्स,गुरूग्राम
1,51,000/-

श्री मोहन लाल जांगिड जी प्रदेश अध्यक्ष(गुजरात)
1,51,000/-

श्री चंद्राप्रकाश जी गुरूदत्त शर्मा जी (गांधीधाम) 1,51,000/-

श्री अनिल एस.जांगिड जी (महामंत्री महासभा)गुरूग्राम
1,51,000/-

श्री हरीराम जांगडा जी ग्राम कासन
1,51,000/-

श्री राजेन्द्र जांगिड जी पटेल नगर, गुड़गांव
1,51,000/-

श्री कृष्ण अवतार जांगिड जी ग्राम कासन
1,51,000/-

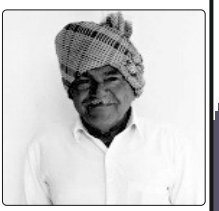

श्री पन्ना लाल जांगिड जी ग्राम कासन
1,51,000/-

मुण्डका में महासभा भवन हेतु दानदाताओं की सूची

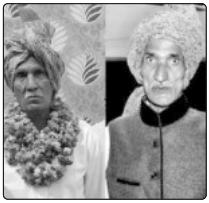

मास्टर जगदीश चंद्र जागिड,
श्री ज्ञानचंद जांगिड, ग्राम-कासन
1,51,000/-

श्री हरीश जी
नरेश जी दम्मीवाल
(जोधपुर) 1,51,000/-

श्री उमाकांत जी
धानेरा
1,51,000/-

श्री किशोर कुमार जांगडा जी
बहादुरगढ
1,51,000/-

श्री वेद प्रकाश आर्य
सवाई माधोपुर
1,51,000/-

श्री सत्यनारायण शर्मा
पूतली वाले, सागरपुर,दिल्ली
1,51,000/-

श्रीमती दयावंती धर्मपत्नी
श्री रामकिशन शर्मा,(डीसीपी)
द्वारका,दिल्ली 1,51,000/-

श्री बी.सी.शर्मा
जयपुर
1,51,000/-

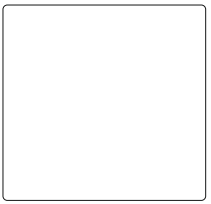

श्री मोतीलाल जांगिड
(वैशाली, जयपुर)
1,51,000/-

श्री तेजस लुंजा जी
बेंगलूरू
1,50,000/-

जिलासभा
पुणे(महाराष्ट्र)
1,50,000/-

जांगिड समाज जिला भिवानी
(हरियाणा)
1,22,311

श्री सत्यपाल वत्स जी,
(बहादुरगढ़)
1,21,251/-

श्री उम्मेद सिंह डेरोलिया
जी,(बहादुरगढ़)
1,21,251/-

श्री राजू जांगडा सुपुत्र
श्री ईश्वर सिंह ठेकेदार(नजफगढ़,
दिल्ली)-1,21,000/-

इंजि. जय इन्द्र शर्मा जी,
(कुरथल)विज्ञान लोक,दिल्ली
1,11,121/-

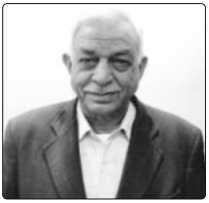

श्री लक्ष्मी नारायण जी,
(गुड़गांव)
1,11,111/-

डॉ. शेरसिंह जी जांगडा
गुड़गांव,(प्र.अ.हरि.)
1,11,111/-

श्री रमेश कुमार जी,
(सोनीपत, हरि.)
1,11,111/-

श्री वीरेन्द्र आर्य जी
(रोहतक)
1,11,111/-

मुण्डका में महासभा भवन हेतु दानदाताओं की सूची

श्री संजीव कुमार जी, (रोहतक)
1,11,111/-

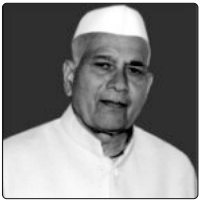

श्री रघुवीर सिंह आर्य जी शामली, (उत्तर प्रदेश)
1,11,000/-

श्री नाथूलाल जांगिड जी एवं श्री हरीशंकर जांगिड जी,(जयपुर)
1,11,000/-

श्री सुरेंद्र जांगिड़ जी, (दिल्ली)
1,11,000/-

श्री फूलकुमार जी जांगडा, (सोनीपत)
1,11,111/-

श्री प्रवीण जांगडा जी, (द्वारका, दिल्ली)
1,11,000/-

श्री श्रीचन्द शर्मा जी, मुल्तान नगर (दिल्ली)
1,11,000/-

श्री अमर सिंह जांगिड़ जी, (मुम्बई)
1,11,000/-

श्री बनवारी लाल जांगिड, (त्रिनगर, दिल्ली)
1,11,000/-

श्री कृष्ण कुमार बिजेनिया जी (ग्राम ककरौला, दिल्ली)
1,11,000/-

श्री विश्वकर्मा जांगिड समाज सेवा समिति सोजत सिटी (राजस्थान)
1,11,111

शाखा सभा श्याम विहार (दिल्ली)
1,11,000

शाखा सभा नजफगढ़, (दिल्ली)
1,11,000/-

उत्तम नगर शाखा सभा (दिल्ली)
1,11,000/-

श्री ओम नारायण शर्मा जी, साहिबाबाद,(पूर्व संपादक जांगिड ब्राह्मण) 1,02,251

श्री ईश्वर दत्त जांगिड जी (रोहतक)
1,02,000/-

श्री राजेन्द्र शर्मा जी, समालखा(पानीपत)
1,01,111/-

श्री बृजमोहन जांगिड जी (नागपुर)
1,01,101/-

श्री गिरधारी लाल जांगिड जी (नागपुर)
1,01,101/-

श्री सुनील कुमार जांगिड जी (खोडा कालोनी-सुप्रसिद्ध समाजसेवी)
1,01,101/-

मुण्डका में महासभा भवन हेतु दानदाताओं की सूची

श्री अतरसिंह काला जी (नांगलोई, दिल्ली) 1,01,101/-

श्री आर.पी.सिंह जांगिड जी श्याम विहार-प्रभारी प्रादेशिक सभा दिल्ली 1,01,000/-

श्री राजबीर सिंह जी आर्य कोंडली-उपाध्यक्ष पूर्वी दिल्ली जिलासभा 1,01,000/-

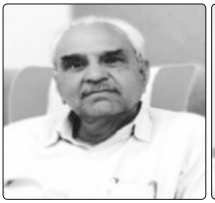

श्री हरिपाल शर्मा जी फालना 1,01,000/-

सीए अनिल कुमार शर्मा जी आई.पी.एक्सटेंशन, दिल्ली) 1,01,101/-

श्री चन्द्रपाल भारद्वाज जी ज्योति कॉलोनी-पूर्व महामंत्री अ.भा.जां.ब्रा.महासभा 1,01,000/-

श्रीमती स्नेहलता जांगिड जी सोनीपत 1,01,000/-

श्री रमेश शर्मा जी, (मै.कमल प्रिंटर्स) दिल्ली 1,01,000/-

श्री दीपक कुमार शर्मा जी ज्योति कालोनी-सह सचिव पूर्वी दिल्ली जिलासभा 1,01,000/-

श्री अशोक कमार शर्मा जी, (औरंगाबाद) 1,01,000/-

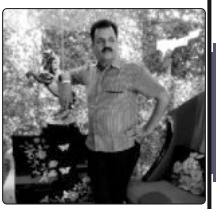

श्री बंशीधर जांगिड जी, गोरेगांव, (मुम्बई) 1,01,000/-

श्री इन्दरराम तेजाराम जांगिड जी, (मुम्बई) 1,01,000/-

श्री गंगादीन जांगिड (दिल्ली) 1,01000/-

श्री रमेश चन्द शर्मा जी (प्रदेशाध्यक्ष-उत्तराखण्ड) 1,01,000/-

श्री जगदीश चन्दर जांगिड जी (सोनीपत) 1,01,000/-

श्री सत्यनारायण शर्मा जी (नांगलोई, दिल्ली) 1,01,000/-

श्री प्रमोद कुमार जांगिड जी (बड़ौत, उ.प्र.) 1,01,000/-

श्री पुरूषोत्तम लाल शर्मा जी (जयपुर,) 1,01,000/-

श्री किशन लाल जांगिड जी जयपुर, 1,01,000/-

श्रीमती विमला देवी किंजा, श्रीमती रामेश्वरी देवी कालोया, श्री विश्वकर्मा महिला संकीर्तन मंडल, रामगंज, अजमेर एवं कार्यकारिणी 1,00,121/-

मुण्डका में महासभा भवन हेतु दानदाताओं की सूची

श्रीमती सुमित्रा देवी जी
ओमप्रकाश शर्मा जी(पूर्व उपप्रधान)
महासभा 1,00,111/-

श्री ब्रह्मानन्द शर्मा जी
सागरपुर दिल्ली,
1,00,001/-

श्री टेकचन्द जांगिड जी
फरीदाबाद,
1,00,000/-

श्री ललित जड़वाल जी
(अजमेर)
1,00,000/-

श्री चंपा लाल शर्मा जी
(खुलढाणा)
1,01,100/-

श्री विजय शर्मा जी
(ताबड़ू)
1,00,000/-

डॉ. ओ.पी. शर्मा जी
(दिल्ली)
1,00,000/-

श्री ओम प्रकाश जांगिड जी
(हिसार)
1,00,000/-

श्री मंगलसैन जी शर्मा
(बड़ौत, उत्तर प्रदेश)
1,00,000/-

श्री सूरजमल जांगिड जी,
(हिंगोली)
1,00,000/-

श्री नानूराम जांगिड जी
(हिंगोली)
1,00,000/-

प. गंगा राम जांगिड जी
(जयपुर)
1,00,000/-

श्री रमेश चंद शर्मा जी,
(इंदौर)
1,00,000/-

श्री पुखराज जांगिड जी
(सिकन्दराबाद)
1,00,000/-

श्री राजतिलक जांगिड जी
(गुड़गांव)
1,00,000/-

श्री बाबूलाल शर्मा जी
(अहमदाबाद)
1,00,000/-

श्री नेमीचन्द जांगिड जी
(सिकन्दराबाद)
1,00,000/-

श्री सोमदत्त जांगिड जी
(नांगलोई, दिल्ली)
1,00,000/-

श्री प्यारे लाल शर्मा जी,
(छतीसगढ़)
1,00,000/-

श्री विद्यासागर जांगिड जी
(गुड़गांव)
1,00,000/-

आवश्यक सूचना

प्रदेशसभा हरियाणा के अन्तर्गत जिलासभा पलवल एवं नूंह के चुनाव करवाने हेतु मतदान केन्द्रों का पूरा विवरण:-

1. जिलासभा-पलवल

नामांकन तिथि:- 14.11.2021 रविवार,
समय :- 10.00 बजे सुबह से 2.00 बजे शाम,
नामांकन स्थल- जांगिड धर्मशाला पलवल
नाम वापसी- 12.00 बजे से 2.00 बजे
मतदान अधिकारी:-1. श्री महेन्द्र कुमार -पलवल -8168208510
2. श्री राजकुमार पलवल- 9306622464
3. श्री रामजीत -हथीन- 9813142217
4. श्री खुशेन्द्र -पलवल- 9991043266
बूथ प्रभारी:- 5. श्री निशांत जांगिड एडवोकेट- 9416406254
जिला अध्यक्ष 6. श्री ज्ञानचन्द जांगिड जो सारी व्यवस्था संभालेंगे-8708272989

2. जिलासभा-नूंह

नामांकन तिथि:- 14.11.2021 रविवार,
समय :- 10.00 बजे सुबह से 2.00 बजे शाम
नामांकन स्थल- विश्वकर्मा मंदिर सोहना
नाम वापसी- 12.00 बजे से 2.00 बजे
मतदान अधिकारी:-1 .मा0 शिवनारायण जांगिड जांगिड-घामडौज- 9466427662
2. डा. सत्य प्रकाश जांगिड इन्डरी- 9991368067
3. मा0 हेमराज जांगिड-सोहना 9050933212
4. श्री किशनलाल जांगिड-सोहना- 9466849251
बूथ प्रभारी- 5. श्री रमेश कुमार जांगिड एडवोकेट- 9466293788
जिला अध्यक्ष 6. श्री लेखराम जांगिड जो सारी व्यवस्था संभालेंगे- 9812621097

प्रदेशअध्यक्ष के पास स्वयं जाकर अनापत्ति प्रमाण पत्र लेना होगा और स्टेम्प पेपर पर लिख कर देना होगा कि चुने के बाद एक महीने के अन्दर कार्यभार सौंप दूंगा।

शेष अगले पृष्ठ पर...

चुनाव में भाग लेने वाले प्रत्याशी हेतु आवश्यक निर्देश

1. नामांकन से पहले प्रदेशअध्यक्ष से **N.O.C.** लेना आवश्यक है।
2. सिक्योरटी रू. 5000/- पहले जमा कराना होगा।
3. चुनाव फार्म के रू. 100/- फीस हेतु देने होंगे।
4. शारीरिक रूप से एवं मानसिक रूप से स्वस्थ हो/ पागल व दीवलिया/कोर्ट में कोई केस लाम्बित न हो।
5. अपराधिक गतिविधियों से मुक्त हो।
6. महासमिति का सदस्य होना आवश्क है।

विशेष सूचना

1. नव निर्वाचित जिलाध्यक्षों मे से जिन्होंने अपने पद की शपथ नहीं ली है वो कृपया 30.11.2021 तक ले लें वरना उनके पद को निरस्त कर दिया जायेगा।
2. नव निर्वाचित पदाधिकारी महासभा में पंजीकृत अवश्य करवा लें।

राजपाल एडवोकेट
मुख्य चुनाव अधिकारी
हरियाण प्रदेशसभा, मो-9466723724

साधना

निष्ठापूर्वक अपने कर्तव्य निर्वहन से बढ़कर जीवन में और कोई साधना नहीं हो सकती। वह साधना बिलकुल भी श्रेष्ठ नहीं कही जा सकती जो कर्तव्य निर्वहन से बचने के लिए की जाती हो। घर को छोड़कर गुफाओं में बैठ जाने से सिद्धियां प्राप्त नहीं होती है।प्रभू कृपा से घर में रहते हुए भी कर्तव्य पालन करना बड़ी बात है। वो कर्तव्य ही था जिसके लिए भगवान् राम ने अयोध्या व भगवान् श्रीकृष्ण ने वृन्दावन का त्याग किया था। घर के लिए कर्तव्य का त्याग नहीं अपितु कर्तव्य के लिए घर का त्याग किया जा सकेगा।अगर शबरी, केवट और निषाद जैसे भक्त अपने कर्तव्य धर्म में संलग्न रहेंगे तो फिर श्रीराम को अयोध्या छोड़कर उन्हें दर्शन देने अवश्य वन में जाना पड़ेगा।

प्रेरणादायी प्रसंग

पुत्रवधु का ससुर से :- मेरे एक साथी विद्युत विभाग से अधिशासी अभियन्ता सेवानिवृत है और जोधपुर में ही निवास करते है। उनकी धर्मपत्नी का स्वर्गवास दो वर्ष पूर्व हो चुका है। उनके बड़े पुत्र का देहावसान पन्द्रह वर्ष पूर्व हो चुका है। छोटा बेटा व बहु डॉक्टर सरकारी नौकरी की वजह से सरकारी क्वार्टर में रहते है। जैसे वृद्धावस्था बढ़ती गई उन्होंने सोचा कि अपने सामने ही दोनो बेटों को अपनी संपति बाँट दूं। इसलिये उन्होंने पॉश कॉलोनी में अपने बंगले को बेच दिया तथा बेटों व बेटियों में सम्पति का बंटवारा कर दिया और छोटे लड़के की पुत्रवधु व दो पोतों के लिये शहर से बाहर की कॉलोनी में बड़ा मकान खरीद लिया तथा खुद विधवा बहु के साथ रहने लग गये। अस्सी का दशक पूर्ण करने के बाद शरीर में शिथिलता आने लगी और बीमारियों ने घेर लिया। मैं उन्हें संभालने जाता रहता हूँ। एक दिन मैं उनके घर पहुँचा तो पुत्रवधु ने कहा आप बैठिये में पापाजी को खाना खिला देती हूँ। मेरे सामने ही ससुर को पलग पर सहारा देकर बैठा दिया और पीछे से पैर से सहारा देकर, एक हाथ में थाली तथा दूसरे हाथ में रोटी का कौर खिलाने लगी।

मेरे साथी कमजोरी की वजह से आँख भी नहीं खोल पा रहे थे और भी कमजोर हो गई थी। खाना खिलाने के बाद वह ससुरजी के सिर पर सहलाने लगी जैसे एक माँ बच्चे को स्नान करने के बाद सिर सहलाती है। मैंने कल्पना की मेरे साथी की माताजी की मृत्यु के बाद उन्हीं के घर पुत्रवधु के रूप में पुनः जन्म हुआ है। देखा आपने पुत्रवधु की ससुर से रिश्तेदारी

बेटे की पिताजी से:- मेरे जान पहिचान वाले राजस्थान सरकार में उच्च प्रशासनिक अधिकारी है। उनका छोटे गाँव में एक शिक्षक के घर पर जन्म हुआ। फिर अपनी मेहनत से भारतीय प्रशासनिक सेवा में चयन हुआ। उनकी शादी भी उच्च प्रशासनिक अधिकारी के साथ हुई, जो कि शायद उच्च घराने की लगती थी, वे अपने शिक्षक ससुर से मिलने गाँव नहीं जाती थी, लेकिन भाई साहब पिताजी को संभालने गाँव दौरा करते रहते थे। वे गुरुदेव समय के साथ पूर्ण वृद्धावस्था में पहुंचे तो बेटे ने कहा आपकी आखिरी इच्छा क्या है ? पिताजी ने कहा- मैं चाहता हूँ मैं हरिद्वार में रहूँ और वहीं अपना प्राण त्यागें। वह प्रशासनिक अधिकारी पिताजी को हरिद्वार ले गये। तीन-चार महिने उनकी पूरी सेवा की, यहाँ तक कि पिताजी के मल-मूत्र से गंदे कपड़े खुद धोते थे और देह त्यागने के पहले पिताजी खूब आशीष देते गये। देखी आपने बेटे की पिताजी के प्रति के प्रति कर्तव्यपरायण।

(ताराचन्द जांगिड) अधिशाषी अभियन्ता (से.नि.)
जांगिड ब्राह्मण के 23-बी, सुभाष नगर पाल रोड, जोधपुर

कर्मवीर

कर्मवीर कभी बेरोजगारी का रोना नहीं रोते, साथ ही बेरोजगारी के कारण आत्महत्या भी नहीं करते, जबकि हमारे बच्चे ही रोना रोते हैं बेरोजगारी का। क्या कारण है जानें:-

एक लड़का मेरे पास आया और बोला- भैया मैं बेरोजगार हूं, कहीं नौकरी नहीं मिल रही है बहुत परेशान हूं। आप ही बताइये मोदी जी ने कहा था कि हर साल लाखों युवाओं को रोजगार दूंगा, सात साल होने को जा रहे हैं, कुछ भी नहीं मिला।

मैंने उससे कुछ प्रश्न पूछे और सारे प्रश्नों का जवाब इस प्रकार रहा.....

तुम टेलरिंग/कटिंग (दर्जी) का काम करोगे। जवाब मिला.. नहीं । लेडीज ब्यूटी पार्लर का काम करोगे? नहीं। तो मर्दों के नाई (बार्बर बन जाओ)? नहीं। हलवाई का काम कर लो? नहीं। बढ़ई (कारपेंटर) का काम कर लो? नहीं? लुहार का काम करोगे? नहीं ? खराद मशीन पर काम करोगे? नहीं? वेल्डिंग कर सकते हो? नहीं? ग्राफिक डिजाइनिंग का कुछ काम आता है? नहीं? कबाड़ी का काम कर लो? नहीं। सब्जी/फ्रूट का धंधा कर लो? नहीं। बाइक रिपेयरिंग आती है? नहीं। अकाउंट का काम आता है? नहीं। प्लम्बरिंग का काम कर सकते हो? नहीं। खेती बागवानी का काम करोगे? नहीं। पंचर लगा लोगे? नहीं। होटल या रेस्टोरेंट में काम करोगे? नहीं। बिजली रिपेयरिंग, पंखा, ए.सी., गीजर, कूलर, वाशिंग मशीन, रिपेयरिंग कर लोगे? नहीं। कपड़े की दुकान पर काम कर सकते हो? नहीं। किराना दुकान पर काम कर सकते हो? नहीं। सिलाई या टेलरिंग का काम जानते हो? नहीं। पान मसाला गुटखा बेचोगे? नहीं। मजदूरी तो कर ही सकते हो? नहीं।

फिर मैंने पूछा तुमको क्या काम आता है? वह बोला जी मैं पढ़ा लिखा हूं बी.ए.पास हूं। ये सब काम मेरे लिए नहीं, मुझे तो बस सरकारी कलर्क की नौकरी चाहिए। वरना मेरी शादी भी नहीं होगी। पढ़े लिखे होने के बावजूद मुझे कोई काम नहीं मिल रहा है। वह बोला सरकार ने हम जैसे अनेक युवाओं को बेरोजगार कर दिया। तब से दिमाग खराब है मेरा।

यह वह लोग हैं जिनको कोई प्रधानमंत्री तो क्या पूरी दुनिया में कोई नौकरी नहीं दे सकता। आज के युवा मेहनत करने के बजाय सरकार को गाली देना बेहतर विकल्प मानते हैं।

मैं बोला तुमको ही कुछ काम करना नहीं आता, कमी काम करने वालों की है काम की नहीं, काम चारों तरफ बिखरे पड़े हैं और उनको अन्य समाज के लड़के झपट रहे हैं। तुम लोग बस सरकारी या किसी 10-15 हजार वाली नौकरी के इंतजार में बैठे हो, और बेरोजगारी का रोना रो रो के सरकार का स्यापा कर रहे हो। प्रधानमंत्री के ''स्किल इंडिया'' का लाभ कुछ कर्मवीर लड़के उठा रहे हैं और हमारे लड़के सरकारी या गैर सरकारी परंतु नौकरी के इंतजार में बैठे रहते हैं। अपने बच्चों को शिक्षित करने के साथ ही हुनरमंद भी बनाइए अपने अंदर यह

सोच हटा दीजिए कि ''लोग क्या कहेंगे'' या ''लोग क्या सोचेंगे'' क्योंकि लोग क्या कहेंगे यह सबसे खतरनाक वाक्य है जो हमें बर्बाद कर देता है। बच्चों को समझाइए कि कोई भी काम छोटा नहीं होता। जैसे धीरूभाई अंबानी ने पहले पेट्रोल पंप पर भी नौकरी की थी और शुरू शुरू में पुराने कपड़ों के खरीदने बेचने का व्यापार किया था, अगर वह सरकारी नौकरी का इंतजार करते रहते तो किसी सरकारी विभाग में क्लर्क मैनेजर बनकर ही रह जाते और रिलायंस कंपनी ना बनती। अटल बिहारी वाजपेई जी जब पाकिस्तान बस लेकर गए थे तब उनके साथ फिल्म अभिनेता देवानंद भी गए थे और देवानंद जो अपनी डिग्री पाकिस्तान से पलायन के समय नहीं ले पाए थे वह डिग्री जब उन्हें दी गई तब उन्होंने कहा कि आज मैं जो कुछ हूं अपनी इस छूटी हुई डिग्री के कारण हूं क्योंकि मेरे भाई मुझे नेवी में क्लर्क की नौकरी दिलवा रहे थे क्योंकि मैं अपनी डिग्री पाकिस्तान ही भूल गया था इसलिए मुझे वह कलर्क की की नौकरी नहीं मिली, शुरू में मैं मायूस रहा मैनें संघर्ष किया और आज मैं इस मुकाम पर हूं, अगर मेरे पास यह डिग्री उस वक्त होती तो मैं आज नेवी का क्लर्क होकर मर जाता मुझे कोई नहीं पहचानता।

बच्चों को हुनर सिखाने की सीख दीजिए हमें भी अपने समाज के बच्चों को पढ़ाई के अलावा कुछ ना कुछ हुनर भी सीखने के लिए ध्यान अवश्य दिलाना चाहिए। समाज का हर व्यक्ति जब कुछ ना कुछ हुनर जानने वाला होगा, बेरोजगारी की समस्या तभी हल होगी।

संकलित

इंद्र सिंह सैवाल बाड़मेर

अजीब खेल है परमात्मा का

पानी तो चाहे सागर में हो, आंखों में जल बूंद होती है।
समाया राज और गहरा आख-सागर दोनों में होती है।
अजीब खेल उस परमात्मा का,
लिखता भी वही है और मिटाता भी वही है।
राह से कर्मानुसार भटकाता भी वही है और
सबको राह दिखाता भी परमात्मा वही है।।
कर्मो में उलझाता भी दीन दयाल वही है,
भक्ति का वरदान दे सुलझाता भी वही है।
जीवन संकटों में दिखता नहीं,
पर संकट में साथ देता वही हैं।।
दूर बैठकर भी फरियाद हमारी,
सुनने की ताकत वह दाता रखता है।
तुम्हें जीवन में कब क्या चाहिए,
वो भी हमें ध्यान से इच्छा पूरी करता रहता है।

डॉ. रघबीर जांगिड, चण्डीगढ़

ईश्वर और सुंदर भविष्य

एक मन्दिर था, उसमें सभी लोग नौकरी पर थे। आरती वाला, पूजा कराने वाला आदमी, घण्टी बजाने वाला भी नौकरी/पगार पर। घण्टी बजाने वाला आदमी आरती के समय, भाव के साथ इतना व्यस्त हो जाता था कि होश में ही नहीं रहता था। व्यक्ति पूरे भक्ति भाव से खुद का काम करता था। मन्दिर में आने वाले सभी व्यक्ति भगवान के साथ साथ घण्टी बजाने वाले व्यक्ति के भाव के भी दर्शन करते थे। उसकी भी वाह-वाह होती थी। एक दिन मन्दिर का ट्रस्ट बदल गया, और नये ट्रस्टी ने ऐसा आदेश जारी किया कि अपने मन्दिर में काम करने वाले सब लोग पढ़े लिखे होना जरूरी है। जो पढ़े लिखें नहीं है, उन्हें निकाल दिया जाएगा। उस घण्टी बजाने वाले भाई को ट्रस्टी ने कहा कि: तुम्हारी आज तक का पगार ले लो। कल से तुम नौकरी पर मत आना। उस घण्टी बजाने वाले व्यक्ति ने कहा: साहेब भले मैं पढ़ा लिखा नहीं हूं, परन्तु इस कार्य में मेरा भाव भगवान से जुड़ा हुआ है। ट्रस्टी ने कहा: सुन लो तुम पढ़े लिखे नहीं हो, इसलिए तुम्हे रखने में नहीं आएगा। दूसरे दिन मन्दिर में नये लोगो को रखने में आया। परन्तु आरती में आये लोगो को अब पहले जैसा मजा नहीं आता था।

घण्टी बजाने वाले व्यक्ति की सभी को कमी महसूस होती थी। कुछ लोग मिलकर घण्टी बजाने वाले व्यक्ति के घर गए, और विनती की कि तुम मन्दिर आओ। उस भाई ने जवाब दिया: मैं आऊंगा तो ट्रस्टी को लगेगा कि मैं नौकरी लेने के लिए आया है। इसलिए मैं नहीं आ सकता। वहाँ आये हुए लोगो ने एक उपाय बताया कि, मन्दिर के बराबर सामने आपके लिए एक दुकान खोल के देते है। वहाँ आपको बैठना है और आरती के समय घण्टी बजाने आ जाना, फिर कोई नहीं कहेगा तुमको नौकरी की जरूरत है।

उस भाई ने मन्दिर के सामने दुकान शुरू की और वो इतनी चली कि एक दुकान से सात दुकान और सात दुकानो से एक फैक्ट्री खोली। अब आदमी मंहगी गाड़ी से घण्टी बजाने आता था। समय बीतता गया। ये बात पुरानी सी हो गयी...मन्दिर का ट्रस्टी फिर बदल गया। नये ट्रस्ट को नया मन्दिर बनाने के लिए दान की जरूरत थी। मन्दिर के नये ट्रस्टी को विचार आया कि सबसे पहले उस फैक्ट्री के मालिक से बात करके देखते है। ट्रस्टी मालिक के पास गया। सात लाख का खर्चा है, फैक्ट्री मालिक को बताया। फैक्ट्री के मालिक ने कोई सवाल किये बिना एक खाली चेक ट्रस्टी के हाथ में दे दिया और कहा चैक भर लो। ट्रस्टी ने चेक भरकर उस फैक्ट्री मालिक को वापस दिया। फैक्ट्री मालिक ने चेक को देखा और उस ट्रस्टी को दे दिया। ट्रस्टी ने चेक हाथ में लिया और कहा सिग्नेचर तो बाकी है। मालिक ने कहा मुझे सिग्नेचर करना नहीं आता है लाओ: अंगुठा मार देता हुँ, वही चलेगा...ये सुनकर ट्रस्टी चौंक गया और कहा: साहेब तुमने अनपढ़ होकर भी इतनी तरक्की की, यदि पढे लिखे होते तो कहाँ होते? वह सेठ हँसते हुए बोला: भाई, मैं पढ़ा लिखा होता तो बस मन्दिर में घण्टी ही बजा रहा होता। **शिक्षा:**- कार्य कोई भी हो, परिस्थिति कैसी भी हो, हमारी योग्यता, हमारी भावनाओं पर निर्भर करती है। भावनायें शुद्ध होगी तो ईश्वर पक्का हमारा साथ देगा।

उमाशंकर जाँगिड,मकराना, 9461314959

जांगिड समाज की होनहार प्रतिभाएं

डॉ. नरेन्द्र कुमार शर्मा आयकर विभाग में पदोन्नति के बाद प्रधान आयुक्त बने

जांगिड़ समाज के गौरव, विनम्रता, शालीनता और मिलनसार प्रवृत्ति के धनी और माता-पिता के परम भक्त डॉ. नरेन्द्र कुमार अपनी मेहनत, परिश्रम और पुरुषार्थ के बल पर ही आयकर विभाग में प्रधान आयुक्त के पद पर पहुंचे हैं।

एक साधारण परिवार में पैदा हुए डॉ. नरेन्द्र कुमार की प्रारम्भिक शिक्षा अपने गांव सिलाना, जिला झज्जर में हुई, उसके पश्चात दसवीं कक्षा साथ लगते गांव दादनपुर से पास की। उसके पश्चात हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार से पशु-चिकित्सा विज्ञान में स्नातकोत्तर की डिग्री हासिल की।

पिता श्री लेखराम जांगिड सरकारी स्कूल में प्रवक्ता थे, लेकिन उनकी सोच बड़ी महान थी, इस लिए अपने बच्चों को उच्च शिक्षा दिलवाने के लिए पैसे का अभाव होते हुए भी उन्होंने तीनों भाइयों और दोनों बहनों को उच्च शिक्षा दिलवाने में कोई कंजूसी नहीं की और सभी का उचित मार्गदर्शन करके पिता होने के दायित्व का निर्वहन भलीभांति किया। मां श्रीमती रेवती देवी की सतत् साधना और अमूल्य योगदान से पिता जी का मनोबल बढ़ता रहा। मां ने खुद पुराने कपड़े पहन कर अपने पुत्रों और पुत्रियों की हर जरूरत को पूरा किया।

डॉ. साहब के बड़े भाई सुरेंद्र कुमार जांगिड़, लोक निर्माण विभाग में उप-मण्डल अधिकारी के पद से सेवनिवृत्त हुए हैं, इनके छोटे भाई डॉ हरेंद्र कुमार शर्मा एम.डी हैं। प्रारंभ से ही डॉ. साहब, जन सेवा के माध्यम से लोगों की सेवा करना चाहते थे और परमात्मा की अनुकम्पा से उनकी यह इच्छा पहले ही प्रयास में पूरी हो गई और वह वर्ष 1990 बैच के भारतीय राजस्व सेवा के अधिकारी बने। श्री नरेन्द्र कुमार अब तक हिसार, अमृतसर, दिल्ली, सूरत, बड़ोदा और मुम्बई सहित कई शहरों में अपनी सेवाएं दे चुके हैं।

अगस्त में उनकी पदोन्नति आयकर आयुक्त से प्रधान आयुक्त के रूप में हुई है और उनका स्थानांतरण मुम्बई से सूरत में हो गया है। उन्होंने आयकर विभाग के प्रधान आयुक्त के रूप में 1 सितंबर को अपना पदभार ग्रहण कर लिया है। डॉ. साहब से मुझे मिलने का कम ही अवसर मिला है, लेकिन उनमें जो अपनापन और समाज के उत्थान के प्रति जो विचार हैं उनका मैं विशेष रूप से कायल हूं। यह उदात्त भावना केवल माता-पिता द्वारा दिए गए उच्च संस्कारों से ही सम्भव हो सकती है। उनकी सोच आम आदमी से कहीं ऊपर है और उनका मानना है

कि गरीब और अमीर हमारी सोच और मनोवृत्ति की ही उपज है। वास्तव में व्यक्ति अपने व्यवहार और आचरण से महान बनता है न कि पैसे से।

डॉ. साहब की धर्मपत्नी श्रीमती इन्दु शर्मा भी साक्षात देवी का स्वरूप है। अहंकार और घमण्ड से वह कोसों दूर है। ऐसा परिवार सौभाग्य से ही मिलता है। डॉ. साहब इसी प्रकार से निस्वार्थ भाव से समाज की अहर्निश सेवा करते रहें।

अ0भा0जा0 ब्राह्मण महासभा डॉ नरेन्द्र कुमार के उज्जवल भविष्य की मंगल कामना करतीहै।

प्रियंका जांगिड़ ने 12 कक्षा में रोहतक जिले में प्रथम स्थान हासिल किया

प्रियंका जांगिड़ ने एक बार फिर अपनी प्रतिभा का परचम फहराया है। उन्होंने हरियाणा विद्यालय शिक्षा बोर्ड द्वारा संचालित 12वीं की परीक्षा में 98 प्रतिशत अंक हासिल करके रोहतक जिले में प्रथम स्थान हासिल किया है और जांगिड़ समाज का नाम रोशन किया है। उल्लेखनीय है कि प्रियंका ने 10वीं की बोर्ड की परीक्षा में भी 95 प्रतिशत अंक हासिल करके महम खण्ड जिला रोहतक में प्रथम स्थान हासिल किया था।

इनके पिता राजेश जांगिड़, हरियाणा के बिजली विभाग में कार्यरत हैं और इनकी मां श्रीमती बिमला देवी गृहिणी है। राजेश ने बताया कि प्रियंका पहली कक्षा से ही सदैव बेहतर अंको से पास होती रही है और इसी आत्मविश्वास ने उसे आगे बढ़ने की प्रेरणा दी है। 10वीं कक्षा में बेहतर अंक हासिल करने के कारण उसे सहीराम वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय महम द्वारा सम्मानित भी किया गया था।

प्रियंका ने बताया कि वह इंजीनियरिंग की अपेक्षा बी.एस.सी. और एम.एस.सी. पास करने के साथ साथ अपने बड़े भाई जलज शर्मा की तरह ही भारतीय प्रशासनिक सेवा में जाना चाहती है । प्रियंका ने इस सत्र से दिल्ली विश्वविद्यालय में बी.एस.सी. में दाखिला लिया है और वह साथ-साथ भारतीय प्रशासनिक सेवा की तैयारी में भी जूट गई है। परमात्मा के आशीर्वाद से वह अपने लक्ष्य में सफलता हासिल करे।

महासभा प्रियंका जांगिड़ के उज्जवल भविष्य की मंगल कामना करती है।

उप सम्पादक , राम भगत शर्मा

जांगिड समाज की होनहार प्रतिभाएं

कमार्डेंट स्वाति शर्मा का विश्व प्रसिद्ध चीवनिंग स्कॉलरशिप में चयन

राजस्थान होमगार्ड सर्विसेज (आरएसएच) ऑफीसर, कमार्डेंट स्वाति शर्मा को विश्व के श्रेष्ठ व प्रतिष्ठित विश्वविद्यालय में शुमार, यूनाइटेड किंगडम स्थित यूनिवर्सिटी कॉलेज लंदन में मास्टर इन रिस्क डिजास्टर एंड रेसिलींयंस के लिए विश्व प्रसिद्ध चीवनिंग स्कॉलरशिप के लिए चुना गया है।

यूके सरकार के अंतरराष्ट्रीय कार्यक्रम चीवनिंग का उद्देश्य विभिन्न क्षेत्रों में वैश्विक नेतृत्व तैयार करना है। इस प्रतिस्पर्धा में छात्रवृति के लिए वहां की सरकार के फारेन एंड कॉमनवेल्थ आफिस (एफसीओ) द्वारा आर्थिक सहयोग दिया जाता है। अभ्यर्थियों का चयन 162 देशों में स्थित ब्रिटिश दूतावासों और उच्चायोगो द्वारा किया जाता है।

अजमेर की निवासी कमार्डेंट स्वाति शर्मा ने कहा मै अन्तराष्ट्रीय मंच पर भारत और राजस्थान का प्रतिनिधित्व करने के लिए अपने आपको गौरवान्वित महसूस कर रही हूं।

महासभा कमार्डेंट स्वाति शर्मा की दीर्घायु की मनोकामना करते हुए इनके उज्ज्वल भविष्य की मंगल कामना करती है।

सम्पादक

गोहाना जिला सोनीपत की रहने वाली पूजा जांगडा सेना में लेफ्टिनेंट बनी है। बेटी के सेना में लेफ्टिनेंट बनने से पूरे परिवार में खुशी का माहौल है।पूजा जांगडा के पिता ओमप्रकाश जांगडा सेना में हवलदार के पद से सेवानिवृत है। पूजा की मां सुनिता जांगडा गृहणी है। उन्होंने बताया कि बेटी का बचपन से सपना पिता की तरह से सेना में जाकर देशसेवा करने का था। पूजा जांगडा के पति राहुल जांगडा हरियाणा पुलिस में है और इस समय फरीदाबाद में नियुक्त है। पूजा के पिता ने बताया कि पूजा इस समय चंडीगढ के आर्मी अस्पताल में नर्सिंग अधिकारी के पद हैं।

महासभा पूजा जांगडा की दीर्घायु की मनोकामना करते हुए इनके उज्ज्वल भविष्य की मंगल कामना करती है।

सम्पादक ओमप्रकाश सैवाल

जांगिड समाज की होनहार प्रतिभाएं

डॉ. अनु जांगिड ने एम.डी.की परीक्षा में प्रथम स्थान हासिल किया। प्रतिभा किसी का मोहताज नहीं होती है यह सिद्ध करके दिखलाया है-डॉ. अनु जांगिड ने जिन्होंने अपनी मेहनत, लग्न और सतत् साधना से सफलता की सीढ़ी पार करते हुए अभी हाल ही में एम.डी पाथोलोजी की परीक्षा पास करके जांगिड़ समाज को गौरवान्वित किया है। डॉ अनु का शैक्षिणिक रिकार्ड शुरू से ही उत्कृष्ट रहा है। उन्होंने 12वीं कक्षा न्यू लोहारिया वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय हिसार से 87 प्रतिशत अंकों के साथ सन 2010 पास की और उसके पश्चात महाराजा अग्रसेन मैडिकल कॉलेज अग्रोहा से एम.बी.बी.एस. पास की तथा इसके पश्चात हाल ही में अपनी एम.डी.की डिग्री सिंह त्रिशदाब्दी मैडिकल कॉलेज गुरुग्राम से पाथोलोजी में इसी वर्ष 2021 में हासिल की है, वह अपने बैच में टापर रही है।

अनु के पति डाक्टर रवि शंकर जांगिड़ भी ड्रमोटोलाजी में एम.डी. है और अम्बाला में कार्यरत हैं और अनु की ननद डॉ शोभना और उसके पति भी दोनों एम.डी. डाक्टर हैं। इनके ससुर डी.पी.जांगिड़ खाद्य एवं नागरिक आपूर्ति विभाग से जिला खाद्य एवं सप्लाई नियन्त्रक के पद से सेवानिवृत्त हैं। डॉ अनु के परिवार में कुल मिलाकर 16 डाक्टर हैं। अत: यह परिवार हमारे लिए प्रेरणादायक है। महासभा डॉ अनु की दीर्घायु की मनोकामना करते हुए इनके उज्ज्वल भविष्य की मंगल कामना करती है।

पदोन्नति एवं पद स्थापन

विशाल जांगिड़ गांव सौंफ जिला दादरी निवासी,जो कि एक मैकेनिकल इंजीनियर है, वह भारत सरकार के उपक्रम, भारतीय तेल निगम लिमिटेड के कार्यालय, पाली राजस्थान में 28 अगस्त 2017 से ग्रेड वन अधिकारी के पद पर कार्यरत हैं

विशाल जांगिड़ के कार्य के प्रति समर्पण का भावना और उनकी निष्ठा को देखते हुए ही उनकी पदोन्नति सहायक प्रबंधक के पद पर की गई है और भारतीय तेल निगम लिमिटेड, पाली के कार्यलय से स्थानांतरित करके उन्हें भारतीय तेल निगम लिमिटेड रेवाड़ी के प्लांट में सहायक प्रबंधक के पद पर लगाया गया है। उन्होंने अपना नया पदभार इसी महीने अगस्त में संभाल लिया है।

अ0भा0जां0ब्रा0 महासभा इनके उज्जवल भविष्य और दीर्घायु की मंगल कामना करती है।

सम्पादक ओमप्रकाश सैवाल

जांगिड समाज की होनहार प्रतिभाएं

बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी राज जांगिड

बहुआयामी प्रतिभा के धनी राज जांगिड सूबेदार धर्मपाल जांगिड के घर मां धनपति की कोख से पैदा हुए।

इन्होंने लोक कला मंच द्वारा आयोजित पेंटिंग प्रतियोगिता में हरियाणा प्रदेश में प्रथम स्थान प्राप्त किया व जींद में राज्य स्तरीय डांस प्रतियोगिता में भी प्रथम स्थान प्राप्त करके समाज का गौरव और मान बढाया है।

आज श्री जांगिड़ की कविताएं और लेख राष्ट्रीय स्तर के समाचार पत्रों मे हिंदी व अंग्रेजी भाषा में अक्सर छपती रहते है। उन्होंने जांगिड समाज की भलाई के लिए निशुल्क वैवाहिक नेटवर्क चला रखा है, इतना ही नहीं समाज को शिक्षित बनाने के उद्देश्य से, बच्चों के लिए फ्री आनलाइन पढ़ाई भी करवा रहे हैं। वह अंग्रेजी में तथा कई अन्य विषयों में स्नातकोत्तर हैं। अत: उन्होंने विभिन्न प्रकार की नौकरियों की तैयारी के लिए फ्री कोचिंग देने का कार्य भी शुरू किया हुआ है, इससे उन गरीब बच्चों को विशेष सहायता मिलेगी जो पैसे के अभाव में अपने सपनों को पूरा नहीं कर सकते हैं। इतना ही नहीं वह अध्यापन कार्य के साथ ही फिल्म निर्माता निर्देशक व बतौर अभिनेता काम कर रहे हैं। इतनी व्यस्तता के बावजूद समाज सेवा के लिए तन मन धन से हमेशा तैयार रहते हैं। इसके लिए वह निश्चय ही बधाई के पात्र हैं।

महासभा राज जांगिड के उज्ज्वल भविष्य की मंगल कामना करती है।

सतबीर सिंह खंडेलवाल, रोहतक

भूल सुधार- सितम्बर माह 21 की पत्रिका में पृष्ठ न. 48 पर एकता शर्मा के प्राप्तांक 94.4 प्रतिशत की अपेक्षा 96.4 प्रतिशत पढ़ा जाये।

व सितम्बर माह 21 की पत्रिका में पृष्ठ न. 48 पर चिं. कृष्णा शर्मा के पते में मोहन पार्क के स्थान पर श्याम पार्क पढ़ा जाये। भूल के लिए खेद है।

सम्पादक

कविता

'मैं निकला आशाओं की तलाश में..'

मैं शुकुन लेकर निकला था
एक शकून की तलाश में
एक गांव देहात गलियारे से
निकला था एक शहर की ओर
आशाओं की उस तलाश में
सपना मैंने देखा था अजीब-सा
काम धन्धे की भरमार हो
कुछ लोग मेरे साथ हो
मेरे धन्धे के साझेदार हो
कर्म ईमानदारी से करता रहा
सोचता रहा प्रति पल प्रति दिन
जहा मेरे सपनों का संसार हो
यह मैं सब देख रहा था
एक दिन आईने में झाक रहा था
सामने खड़ा एक आदमी था
कह रहा था मुझ से
पगले तू किसको ढूंढ रहा
मैं बोला शकून को ढूढ़ रहा हूं
वो बोला मैं ही तेरा शकून हूं
क्यू तू बाहर ढूंढता फिर रहा?
मैं तो पहले से ही तेरे अन्दर था
अनेक वर्षो से मौजूद हूं
अब आशाएं मेरी फलित हुई
एक अभिलाषा की ज्योत जगी
मैंने मैं को ढूंढा तो.....
एक अमर शकून मूझे मिला
अब तो आशा मेरी पूर्ण हुई
एक अमर-अमिट धन
जो मैंने अपने अन्दर पाया है.....

दलीचंद जांगिड सातारा महाराष्ट्र
मोबाईल 9421215933

मुस्कान

यह मुस्कान ओर हंसी है जो तुम्हारी है
वह वास्तविक जिंदगी है और ये हंसी और मुस्कान जो तुम्हारी, वहीं जिंदगी हमारी है

ये परमात्मा की अमानत दिल जो तुम्हारा है
वही तो मेरे जीवन का असल सहारा है।
ये मनोहारी आंखे है जो तुम्हारी,
वही वास्तव में है अमानत तुम्हारी तो वहीं राह दिखा रही हैं।

ये चेहरा है जो तुम्हारा और उस पर यह मुस्कान सब कुछ ले लिया।

ये तड़पन है जो तुम्हारी,
वह तडपन अब हमारी है। यह कड़वाहट है जो तुम्हारी,
कही जिंदगी न लेले हमारी यही वास्तविक जीवन है।

ये आंखे है जो तुम्हारी,
वही तो राह दिखा रही।

ये चेहरा है जो तुम्हारा,
सब कुछ ले लिया मेरा।

वन्दना शर्मा, दिल्ली

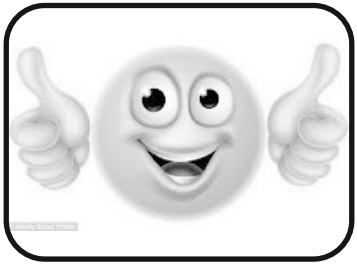

हिन्दुओं का प्रसिद्ध पर्व-दीपावली

भारत वर्ष में अनेक पर्व मनाए जाते है जिनमें हिन्दुओं के पर्वो में दीपावली अत्यंत पवित्र एवं धार्मिक पर्व है। यह पूरे भारत वर्ष में कार्तिक मास की अमावस्या को बड़ी धूमधाम एवं हर्षोल्लास से मनाया जाता है। इस वर्ष दीपवली 4 नवम्बर को है। किसी भी राष्ट्र अथवा जाति के सांस्कृतिक जीवन में त्यौहारों का अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान होता है। ये त्यौहार जीवन में स्फूर्ति, नव चेतना, उल्लास एवं उत्साह भरते है तथा समाज के अन्य वर्गो के मध्य पारस्परिक सम्पर्क एवं सौहार्द भी स्थापित करते है। प्रत्येक पर्व के साथ कोई न कोई ऐतिहासिक घटना जुड़ी रहती है। दीवाली के मूल में भी रामायण की प्रसिद्ध व महत्वपूर्ण कथा जुड़ी हुई है।

अयोध्या नरेश दशरथ के आदेश पर श्री राम चन्द्र जी को 14 वर्ष का बनवास प्राप्त हुआ था। जिस पर श्री राम जी सीता जी लक्ष्मण सहित वनवास चले गए। जंगल में लंका के राजा रावण ने सीताजी को छल कपट से हरण कर लिया और सीताजी को लंका में अपनी अशोक वाटिका में रख दिया। हनुमान जी ने सीता जी की खोज कर श्री राम जी को पूर्ण विवरण बता दिया जिस पर श्री राम जी ने वानर सेना बनाई और लंका पर चढ़ाई कर दी। सेना लेकर श्री राम जी रामेश्वरम् तक जा पहुॅचे पर आगे समुद्र होने के कारण समुद्र तट पर ही पड़ाव डालना पड़ा । समुद्र के रास्ता न देने पर श्री रामजी ने धनुषबाण लेकर उसे ललकारा तो घबराए हुए समुद्र ने क्षमा याचना करते हुए युक्ति बतायी कि भगवान आपकी सेना में नल व नील दो विश्वकर्मा वंशी हैं। यदि वे अपने हाथ से पत्थर पर आपका (श्री राम) लिखकर पानी में छोड़ेंगे तो वह पत्थर पानी में तैरने लगेगा। इस प्रकार लंका तक पुल तैयार हो जाएगा तथा आप आसानी से श्री लंका में पहुंच जाओगे। इस पर श्री राम जी ने नल-नील को पुल बनाने का आदेश दिया, और नल-नील ने सेना के सहयोग से समुद्र द्वारा बताए रास्ते पर कार्य करना शुरू कर दिया। इस प्रकार लंका तक पूरा पुल तैयार हो गया जो आज भी रामसेतु के नाम से जाना जाता है। तत्पश्चात् श्री राम जी ने अपनी सेना सहित लंका पर चढ़ाई कर राक्षस राज रावण पर आक्रमण कर दिया। कई दिन भंयक द्ध हुआ। अन्त में श्री राम जी ने राक्षस रावण को मार गिराया तथा सीता जी को मुक्त करवा लिया। श्री राम जी सीता जी व लक्ष्मण सहित विश्वकर्मा जी द्वारा निर्मित पुष्पक विमान में बैठकर आकाश मार्ग से अयोध्या सकुशल पहुँचे तो अयोध्यावासियों ने उनका भरपूर स्वागत किया तथा घी के दीपक जलाकर खुशियां मनाई। तबसे यह त्यौहार पूरे देश में हर्ष एवं उल्लास से मनाया जाता है। धन तेरस के दिन लोग नए बर्तन और चांदी के सिक्के खरीदते हैं।

रंग बिरंगी एवं विभिन्न प्रकार की रोशनी कर घरों को सजाया जाता है जिससे अमावस्या की रात प्रकाशमय हो जाती है। रात मे लक्ष्मी जी, व सरस्वती व गणेश जी की पूजा अर्चना करते है। दीपावली पर्व हर्ष, उल्लास एवं पवित्रता का पर्व है। जिस प्रकार दीपक अंधकार का नाश कर देता है उसी प्रकार हमें भी ज्ञान रूपी प्रकाश से अज्ञान, अंध विश्वास, घृणा द्वेष एवं ईर्ष्या रूपी अंधकार को दूर कर, सद्भाव, सौहार्द एवं समरसता का प्रकाश फैलाकर समाज मे परस्पर स्नेह एवं शालीनता का वातावरण बनाए।

''सभी को दीपावली की हार्दिक शुभकामनाएं''

मंजू शर्मा, अध्यापिका, गुड़गांव(हरि0)

भगवान शंकर की अनुकम्पा का प्रसाद

परमात्मा सर्वेश्वर भगवान की असीम अनुकम्पा जीवन में जिस पर हो जाती है, फिर उसका रास्ता भी वह स्वयं ही प्रशस्त करतें हैं। ऐसा ही हुआ अमात्य राजा दुर्दम के अमात्य सम्मुख के साथ, जिसके निरपराध पुत्र की हत्या करके उसे राजा के प्रकोप के कारण जेल में बंद कर दिया गया। लेकिन भगवान शंकर की अनुकम्पा से सम्मुख को राजा बना दिया गया।

जिस समय राजा दुर्दम की मां पार्वती ने क्रोध में आकर हत्या करने का प्रयास किया। उस समय को भगवान शंकर ने पार्वती से राजा दुर्दम को एक अवसर और देने का आग्रह किया । भगवान शंकर के समझाने पर राजा को प्रजा पर किए गए अत्याचारों का बोध हुआ तो उसे अपने आप पर आत्मग्लानि हो गई और इस का प्रायश्चित करने के लिए राजा दुर्दम ने राज सिंहासन का परित्याग करके भगवान शंकर की तपस्या आरंभ करने का संकल्प लिया और उनके स्थान पर अमात्य सम्मुख को राज। सिंहासन पर बैठा दिया गया।

महादेव अपनी अपरम्पार लीला दिखलाने के लिए ही संसार में मानवता के कल्याण के लिए विभिन्न प्रकार की परिस्थितियों को उत्पन्न करते हैं और फिर उसके अनुरूप ही वांछित फल प्रदान करते हैं।

भगवान शंकर ने अमात्य सम्मुख जो उसका परम भक्त था और नैतिकता और सदाचार के मूल्यों में विश्वास रखता था, के साथ हुए अन्याय और उत्पीड़न का पारितोषिक देना था। इसी लिए भगवान शंकर ने राजा दुर्दम के लिए विकट परिस्थितियों का निर्माण किया और पार्वती के अपमान के बदले के रूप में राजा दुर्दम को सही रास्ते पर लाने के लिए उसके मन में वैराग्य उत्पन्न कर दिया और जिसके परिणामस्वरूप पूर्व अमात्य सम्मुख को राजा बनाया गया।

शायद इसीलिए शास्त्रों में कहा गया है कि परमात्मा राजा को रंक भी बना सकता है और रंक को राजा भी और यह सब भगवान की उदारता और अनुकम्पा के कारण ही सम्भव हो सकता है । वेद, शास्त्रों और पुराणों में इस प्रकार के असंख्य उदाहरण मिल जाते हैं, जहां पर मुसीबत के समय भगवान ने स्वयं ही आ कर अपने भक्त की सहायता की है। भगवान पर भरोसा रखो उनकी कृपा दृष्टि सदैव ही अपने भक्त पर बनी रहती है।

समाज की प्रतिष्ठा जरूरी व सर्वोपरि

एक यथार्थपरक शोध, अवधारणा व चिन्तन-

समाज में फूट डालकर राज करने के अंग्रेज दर्शन को जिस प्रकार समाज के तथाकथित पदाधिकारियों ने अंगीकार किया और उसके कारण समाज के जन जन में जिस सीमा तक बिखराव आया है, उसके अनेकानेक पक्ष-विपक्ष आप सभी के सामने हैं।

फूट से टूट के अन्य पक्ष भी हैं किन्तु उन पर विचार करने से पूर्व समाज की भूमिका पर सोचना श्रेयष्कर होगा । इसका कारण यही है कि जब हम पूरे समाज में व्याप्त जड़ता की बात करते हैं तो उसका अर्थ यही है कि यह जड़ता व्यक्ति से लेकर पूरे समाज में व्याप्त हो गयी है । इसके कारण और निवारण के प्रश्न जितने महत्वपूर्ण हैं उनसे अधिक महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि अब तक जितने भी पदाधिकारी आए वे अपनी मनमानी करने में केवल इसीलिए सफल हो गए कि समाज ने न केवल यह सब होते देखा अपितु उसे अपरिहार्य और समाज की मर्यादा मानकर अंगीकार भी कर लिया, कम से कम उसका उस प्रकार प्रतिरोध नहीं किया जैसा समाज को करना चाहिये था।

समाज के संविधान में समाज की ओर किसी ने भी देखना उचित नहीं समझा? इसका परिणाम यह हुआ कि हमारे सामने समाज का संविधान है ही नहीं अपितु समाज को लूटने और लड़ाने वालों का ही भौतिकवादी दर्शन अपनाने पर लूटने और लड़ाने के अलावा अन्य कुछ सीखा भी कैसे जा सकता है?

आधुनिक समाज की प्रत्येक स्तरीय सभाओं, कमेटियों की संविधान अनुरुप शासन प्रणाली, शासन और व्यक्ति के बीच सीधे सम्बन्ध स्थापित करने के सिद्धान्त पर आधारित है। तथाकथित संविधान में समाज का कोई अस्तित्व ही नहीं है। या तो केवल व्यक्ति के अधिकार हैं या शासन के । इस व्यवस्था में आधुनिक विज्ञान, नव धनाड्य होने की मानसिकता भी हावी है । इस विज्ञान में व्यक्ति एवं उसके मन का कोई अस्तित्व ही नहीं है । व्यक्ति का जिस प्रकार खण्डन-विखण्डन करने प्रस्तुतिकरण किया जाता है उससे व्यक्ति भी जड़ समान ही प्रतीत होता है। आधुनिक शासन एवं विज्ञान का सम्मिलित मनोवैज्ञानिक प्रभाव यह है कि समाज और व्यक्ति दोनों ही संज्ञाहीनता निर्जीव समान हो गये । यह व्यापक चिन्तन का विषय है । यहाँ केवल इस वस्तुस्थिति की ओर ध्यानाकर्षण करने का प्रयास मात्र किया गया है ।

व्यक्ति को ही सर्वाधिक महत्व देने के दर्शन के पीछे यह सशक्त अवधारणा है कि व्यक्ति ही समाज का मूल है । अत: व्यक्ति और समाज के शासन के बीच बिचौलियों का कोई स्थान नहीं होना चाहिये बल्कि प्रत्यक्ष सम्बन्ध रहना चाहिये ताकि समाज की समितियों, सभाओं

के प्रति व्यक्ति के मन में कोई संशय नहीं रहे।

जब तक इस जन-समुदाय में सौहाद्रपूर्ण मनोवैज्ञानिक वातावरण एवं सामन्जस्य है तभी तक वह समाज है अन्यथा अधिक उग्र होने पर विखण्डित होकर अनेक में बदल कर रहता है। यह आप सभी जानते हैं।

इसलिए यह आवश्यक है कि सभी स्तर की समितियां या सभाएं, समाज में स्थायित्व और उसमें समरसता पर ही ध्यान केन्द्रित करें और समाज व्यक्ति पर।

समाज का राजनैतिक परिदृश्य काफी अनिश्चयों और निराशाओं से घिरा हुआ है तथा भयानक अनिश्चतता के सदमें से ग्रस्त है, समाज आशंका ग्रस्त है कि पता नहीं क्या होने वाला है, राजनैतिक अस्तित्व न के बराबर है।

साझा करिये- उत्तरदायित्व एवं जनाधार, नया जनादेश जरूरी।

इस चिन्तन की व्याख्या व परिशोधन के लिए समाज के प्रत्येक व्यक्ति को अब तो अपने मूल अस्तित्व को, जिसे भूल चुके हैं, जाग्रत करना होगा, नहीं तो रसातल तैयार है

लोकनाथ शर्मा, भरतपुर(राज0)

जीवन में कई बार मनुष्य क्रोध, अंहकार और ईष्या के वशीभूत होकर दिग्भ्रमित हो जाता है और उसके मन में नकारात्मक शक्तियों का आधिक्य हो जाता है और वह अपनी वाणी पर नियंत्रण खो देता है।

शिवांश रोहितांग के साथ भी ऐसा ही हुआ। वह भगवान शिव के प्रति द्वेष, क्रोध और ईष्या रखता था। इस लिए इस भावना ने रोहितांग को ही अपूर्णीय क्षति पहुंचाई है।उसके आचरण को देखकर भगवान शंकर कहते हैं कि उनके लिए यह सहन कर पाना सरल नहीं है।

मनुष्य को अंहकार और क्रोध रुपी विष नष्ट कर देता है और द्वेष पूर्ण व्यक्ति जब भी किसी भी प्रकार के ज्ञान के प्रति अपनी आंखें बंद कर लेता है तो वह कभी भी सफल नहीं हो सकता है और जिसके परिणामस्वरूप ही मनुष्य को गम्भीर परिस्थितियों का सामना भी करना पड़ सकता है। क्रोध और इर्ष्या के आधिक्य के परिणामस्वरूप ही एक मनुष्य में नकारात्मक सोच का विकास हो जाता है और वह अपने निर्धारित लक्ष्य से भी विमुख हो जाता है। क्योंकि नकारात्मक शक्तियां उस पर हावी हो जाती है ।इसके विपरित एक मृदुभाषी व्यक्ति में एक विशेष प्रकार की ऊर्जा का भी समावेश हो जाता है । जो आप किसी को देते हो, वहीं वापिस लौट कर आपके पास ही आएगा। यह एक अकाट्य सत्य है।

अन्तर्राष्ट्रीय बुजुर्ग दिवस

यह एक शाश्वत सत्य है कि जीवन को बचपन, जवानी और वृद्धावस्था यह तीनों अवस्थाओं से ही गुजरना पड़ता है। आज कल आधुनिक युग में युवा पीढ़ी की अवधारणा बदल गई है। पहले जहां एक बुजुर्ग व्यक्ति को समाज की अमूल्य धरोहर समझा जाता था। समुद्र के समान अथाह विचारों और जीवन के बहुमूल्य सुझावों को अपने में समाहित किए हुए हमारे समाज की धाती है बुजुर्ग समझे जाते थे। आज बुजुर्गो के सम्मान को बहुत बड़ी ठेस पहुंची है। इसी आने वाली समस्या को ध्यान में रखते हुए ही 1 अक्टूबर 1991 को संयुक्त राष्ट्र संगठन ने अन्तर्राष्टीय वृद्धावस्था दिवस मनाने का प्रस्ताव पास किया था और तब से यह दिवस निरन्तर मनाया जा रहा है।

लेकिन विडंबना देखिए आज वही बुजुर्ग अपने आप को नई पीढ़ी के साथ सामंजस्य स्थापित करने में अपने आप को विवश और असहाय पा रहा है। पाश्चात्य सभ्यता और संस्कृति रुपी आंधी ने हमारे सांस्कृतिक और नैतिक मूल्यों को झकझोर कर रख दिया है। आप आज परिकल्पना भी नहीं कर सकते हैं कि कभी एक छत के नीचे तीन -तीन पीढियां साथ साथ रहती थी और यह केवल मात्र एक सपना बन कर रह गया है।

विदेशों में यह प्रचलन है कि बच्चा वयस्क हो गया तो अपने मां बाप से अलग रहना पसंद करता है और इस मनोवृत्ति ने भारत में भी दस्तक दे दी है।मेरे एक मित्र सेवानिवृत्ति के बाद अपनी डाक्टर पत्नी और बच्चों के साथ रहने के लिए इंग्लैड चले गए। मैंने जब भी उससे, बच्चों के बारे में बात करनी चाही तो उसने हमेशा ही अनमने मन से जबाब दिया जिससे उसकी पीड़ा और वेदना का सहज ही अंदाजा लगाया जा सकता था। उन्होंने बताया कि दोनों बच्चे वयस्क होते ही घर छोड़ कर चले गए हैं और उनके बारे में मुझे कुछ भी मालूम नहीं है। बुजुर्गो में 90 प्रतिशत बुजुर्ग गांवों में रहते हैं और इनके पास संशाधनों का अभाव है। ऐसी परिस्थितियों में उन्हें अपना जीवन यापन करने के लिए अपने परिवार के सदस्यों पर निर्भर रहना पड़ता है। इस सोच ने एक नई संस्कृति को बढ़ावा दिया है और वह है वृद्धाश्रम आज कल बड़े-बड़े शहरों में इस वृदाश्राम संस्कृति ने अपने पंख फैलाने शुरू कर दिए हैं। एक बार मै किसी पत्रकार के साथ वृद्धाश्रम में गया तो एक बुजुर्ग मुझे देख कर फूट-फूट कर रोने लगा और कहा कि मेरा इतना तिरस्कार और अपमान होता था कि मैंने घर छोड़ना ही उचित समझा और आज यहां रहने वाले सभी मेरे परिवार के सदस्य बन गए हैं।

मेरा जो जीवन का अनुभव है कि बुजुर्ग एक वटवृक्ष की तरह हैं, जिसकी छाया में बैठकर हम उनके द्वारा संचित अनुभवों का लाभ उठा कर अपने जीवन को धन्य बना सकते हैं।

सन्तान चाहे कितनी भी निष्ठुर और संवेदनहीन हो जाए, लेकिन दुनिया में केवल माता पिता और गुरु ही ऐसे परोपकारी है जो कभी अपने बच्चों के बारे में न तो बुरा सोचते हैं और न ही बुरा करते हैं। इस लिए अपने वृद्ध माता-पिता का सम्मान करो और उनका आशीर्वाद प्राप्त करो आपका जीवन धन्य हो जायेगा। इस अनमोल ज़िन्दगी को माता पिता की अमानत समझ कर उनकी सेवा करें आपका जीवन सुखमय और सफल हो जायेगा।

नरेन्द्र शर्मा, झज्जर

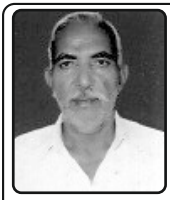

श्री जगदीश प्रसाद जांगिड स.सं:-26344
पुत्र श्री छोटाराम जी जांगिड
जन्मतिथि/आयु-63 वर्ष **शासन**-कसुम्बीवाल
शिक्षा- **दूरभाष**-9982334000
व्यवसाय-ऐग्रीकल्चर व्यवसाय
परिवार- पत्नी श्रीमती शारदा
संतति- तीन पुत्र, दो पुत्री
मूल निवास- मा0 मुण्डवा
वर्तमान पता- ग्राम मुण्डवा, तहसील मुण्डवा, जिला नागौर, राजस्थान-341026

प्रेरणा-श्री तुलसीराम कुलरिया, नागौर

श्री दानाराम बरड़वा जा0 स.सं:-26345
पुत्र श्री रामजीवण
जन्मतिथि/आयु-01.01.1955 **शासन**-कुसुम्बीवाल
शिक्षा- **दूरभाष**- 9001081171
व्यवसाय-सीमेन्ट इंटा
परिवार- पत्नी भंवरी देवी
संतति- चार,
मूल निवास- तालनपुर
वर्तमान पता- गांव तालनपुर, नागौर, राजस्थान-342902

प्रेरणा-स्वयं

श्री घनश्याम लाल पालडीया स.सं:-26346
पुत्र श्री नैनाराम पालडीया
जन्मतिथि/आयु-10.12.1953 **शासन**-पालडीया
शिक्षा-8वीं **दूरभाष**-9414118980
व्यवसाय-रबर पाऊडर
परिवार- पत्नी श्रीमती जमना देवी
संतति- छः
मूल निवास- कुचेरा
वर्तमान पता- पालडीया भवन, तालनपुर, जिला नागौर, राजस्थान-342902

प्रेरणा- स्वयं

श्री नन्द किशोर जांगिड़ स.सं:-26347
पुत्र श्री जंवरीलाल जांगिड
जन्मतिथि/आयु-27.07.1982 **शासन**-
शिक्षा-8वीं **दूरभाष**-8104016709
व्यवसाय-फर्नीचर कार्य
परिवार- पत्नी श्रीमती विमला देवी
संतति- एक पुत्र, एक पुत्री
मूल निवास- मेड़ता,
वर्तमान पता- ग्राम मेड़ता, तहसील मेड़ता, नागौर, राजस्थान-341510

प्रेरणा-स्वयं

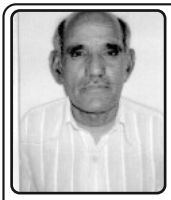

श्री रामेश्वर लाल जांगिड स.सं:-26348
पुत्र श्री लाल जी जांगिड
जन्मतिथि/आयु **शासन**-कसुम्बीवाल
शिक्षा-10वीं **दूरभाष**-9752787521
व्यवसाय-बस बॉडी
परिवार- पत्नी श्रीमती सीपु देवी
संतति- दो पुत्र, दो पुत्री
मूल निवास-
वर्तमान पता- ग्राम मा0 मुण्डवा, जिला नागौर, राजस्थान-341026

प्रेरणा- श्री तुलसीराम कुलरिया-नागौर,

श्री रामकरण जांगिड स.सं:-26349
पुत्र श्री मोहनलाल जांगिड
जन्मतिथि/आयु-05.08.1969 **शासन**-जादम
शिक्षा-उच्च माध्यमिक **दूरभाष**-9414813393
व्यवसाय-फर्नीचर
परिवार- पत्नी श्रीमती मीना भिराणीया
संतति- तीन
मूल निवास- हरसोलाव
वर्तमान पता- हरसोलाव, गोटन, जिला नागौर, राजस्थान-342902

प्रेरणा-स्वयं

श्री रामस्वरूप सुथार स.सं:-26350
पुत्र श्री भवरलाल जी सुथार
जन्मतिथि/आयु-01.01.1976 **शासन**-बरड़वा
शिक्षा-10वी **दूरभाष**-9413269545
व्यवसाय-फर्नीचर कार्य
परिवार- पत्नी श्रीमती विमला पालडीया
संतति- तीन
मूल निवास-गोटन
वर्तमान पता- सीखवालों की गली, गोटन, नागौर, राजस्थान-342902

प्रेरणा-स्वयं

श्री रामलाल चर्वेल जांगिड़ स.सं:-26351
पुत्र श्री केसूराम जी चर्वेल
जन्मतिथि/आयु-01.06.1950 **शासन**-चर्वेल
शिक्षा-8वीं **दूरभाष**-9460162359
व्यवसाय- सर्विस
परिवार- पत्नी श्रीमती चंचल देवी
संतति- सात पुत्री
मूल निवास- खारीया खंगार
वर्तमान पता- खारीया खंगार, जिला जोधपुर, राजस्थान-342606

प्रेरणा-स्वयं

श्री गोपाललाल जांगिड स.सं:-26352
पुत्र श्री बिनंजराज जांगिड
जन्मतिथि/आयु-40 वर्ष **शासन**-सिलग
शिक्षा-5वीं **दूरभाष**-9460954418
व्यवसाय-फर्नीचर कार्य
परिवार-
संतति-
मूल निवास-
वर्तमान पता- तालनपुर रोड रेलवे फाटक के पास, गोटन, जिला-नागौर, राजस्थान-342902

प्रेरणा-स्वयं

श्री मनोहर लाल माकड स.सं:-26353
पुत्र श्री रामदीन माकड
जन्मतिथि/आयु-05.06.1976 **शासन**-माकड
शिक्षा-10वीं **दूरभाष**-9799340430
व्यवसाय-मशीनरी
परिवार- पत्नी श्रीमती अनू देवी
संतति- दो
मूल निवास- तालनपुर
वर्तमान पता- गांव तालनपुर, बडा, भास, गोटन, तहसील मेडता सिटी, जिला नागौर, राजस्थान-342902

प्रेरणा-स्वयं

श्री मोहनलाल माकड़ स.सं:-26354
पुत्र श्री तुलचीराम माकड़
जन्मतिथि/आयु-01.07.1974 **शासन**-माकड़
शिक्षा- **दूरभाष**-9680902004
व्यवसाय-उप सरपंच
परिवार- पत्नी श्रीमती दुर्गा देवी
संतति- एक पुत्र, एक पुत्री
मूल निवास- टालनपुर
वर्तमान पता- मु.पो. टालनपुर, बड़ा बास, तहसील मेड़ता सिटी, जिला नागौर, राजस्थान-342902
प्रेरणा- स्वयं

श्री रामकरण माकड़ स.सं:-26355
पुत्र श्री बस्तीराम माकड़
जन्मतिथि/आयु-11.04.1960 **शासन**-माकड़
शिक्षा-5वीं **दूरभाष**-9660919196
व्यवसाय-
परिवार- पत्नी श्रीमती गोदावरी देवी
संतति- तीन
मूल निवास- टालनपुर, बडा बास
वर्तमान पता- मु.पो. टालनपुर, बड़ा बास, तहसील मेड़ता सिटी, जिला नागौर, राजस्थान-342902
प्रेरणा- स्वयं

श्री रामलाल सुथार स.सं:-26356
पुत्र श्री भंवर लाल सुथार
जन्मतिथि/आयु-10.07.1969 **शासन**-माकड़
शिक्षा-एम.ए., बीएड **दूरभाष**-9772821421
व्यवसाय-व्याख्याता (स्कूल शिक्षा)
परिवार- पत्नी श्रीमती विमला
संतति- तीन
मूल निवास- ग्राम पोस्ट टालनपुर
वर्तमान पता- ग्राम पोस्ट- टालनपुर, बाया-गोटन, जिला नागौर, राजस्थान-342902
प्रेरणा- स्वयं

श्री सुखराम बरड़वा स.सं:-26357
पुत्र श्री गुलाबराम बरड़वा
जन्मतिथि/आयु- **शासन**-बरड़वा
शिक्षा- **दूरभाष**-9414295332
व्यवसाय- मोटर पार्टस विक्रेता
परिवार- पत्नी श्रीमती सीमा देवी
संतति- एक पुत्र, एक पुत्री
मूल निवास- टालनपुर
वर्तमान पता- ग्राम पोस्ट- टालनपुर, जिला नागौर, राजस्थान-342902
प्रेरणा- स्वयं

श्री नरपत सुथार स.सं:-26358
पुत्र श्री भंवरलाल सुथार
जन्मतिथि/आयु-20.01.1981 **शासन**-बरड़वा
शिक्षा-8वीं **दूरभाष**-9414813445
व्यवसाय-फर्नीचर वर्क्स
परिवार- पत्नी श्रीमती कौशल्या देवी
संतति- तीन
मूल निवास- टालनपुर
वर्तमान पता- टालनपुर रोड, रेलवे फाटक के पास, जिला नागौर, राजस्थान-34292
प्रेरणा- स्वयं

श्री अशोक बरड़वा स.सं:-26359
पुत्र श्री रामप्रसाद बरड़वा
जन्मतिथि/आयु-05.07.1979 **शासन**-बरड़वा
शिक्षा- बीकॉम, **दूरभाष**-9461335111
व्यवसाय- उद्यमी, कान्टेक्टर
परिवार- पत्नी श्रीमती पुस्सी देवी
संतति- दो
मूल निवास- गांव टालपुर
वर्तमान पता- गांव टालनपुर, बाया गोटन, जिला नागौर, राजस्थान-342902
प्रेरणा- स्वयं

श्री भागीरथ बरड़वा स.सं:-26360
पुत्र श्री मांगीलाल बरड़वा
जन्मतिथि/आयु-28.07.1958 **शासन**-बरड़वा
शिक्षा-10वीं **दूरभाष**-9414603166
व्यवसाय-जोधपुर स्टोन कटिंग उद्योग
परिवार- पत्नी श्रीमती कंचन देवी
संतति- छः
मूल निवास- टालनपुर
वर्तमान पता- टालनपुर रोड, गोटन, जिला नागौर, राजस्थान-342902
प्रेरणा- स्वयं

श्री किशोरी लाल जांगिड स.सं:-26361
पुत्र स्व. श्री मूलचन्द जांगिड
जन्मतिथि/आयु-05.06.1952 **शासन**-बालदिया
शिक्षा- एम.ए., बीएड **दूरभाष**-8059814709
व्यवसाय- सेवा निवृत अध्यापक
परिवार- पत्नी श्रीमती माया देवी
संतति- एक दो, तीन पुत्री
मूल निवास- नीरपुर, नियर नारनौल,
वर्तमान पता- ग्राम नीरपुर, बाया नारनौल, जिला महेन्द्रगढ, हरियाणा-123001
प्रेरणा- आसाराम शर्मा रेवाडी

मास्टर रामअवतार जांगिड स.सं:-26362
पुत्र श्री हरद्वारी लाल जांगिड
जन्मतिथि/आयु-13.11.1954 **शासन**-लुहांनिया
शिक्षा-एम.ए., बीएड **दूरभाष**-9466784771
व्यवसाय-सेवा निवृत हेड मास्टर
परिवार- पत्नी श्रीमती शारदा देवी
संतति- एक पुत्र, तीन पुत्री
मूल निवास- रेवाडी, हरियाणा
वर्तमान पता- मोहित आचार फैक्ट्री, भक्ति नगर गढ़ी, बोलनी रोड, रेवाडी, हरियाणा-123401
प्रेरणा- स्वयं

श्री ईश्वर जांगिड स.सं:-26363
पुत्र श्री रामकुमार जांगिड
जन्मतिथि/आयु-13.05.1957 **शासन**-छिछोलिया
शिक्षा-10वीं **दूरभाष**-9810368282
व्यवसाय-एस्कोर्ट फरीदाबाद
परिवार- पत्नी श्रीमती स्व. शकुन्तला देवी
संतति-
मूल निवास- गांव किरडोद, डा.दादनपुर, झज्जर
वर्तमान पता- म.न. 2382, सेक्टर-8, फरीदाबाद, हरियाणा
प्रेरणा- आसाराम शर्मा, रेवाडी

संरक्षक सदस्य परिचय

श्री प्रहलाद जांगिड **स.सं:-26364**
पुत्र श्री हरीश चन्द्र
जन्मतिथि/आयु-05.03.1966 **शासन**-राजोतिया
शिक्षा-एमएससी, बीएड **दूरभाष**-9466678270
व्यवसाय-सरकारी जॉब
परिवार- पत्नी श्रीमती उषा रानी
संतति- एक
मूल निवास- बावल
वर्तमान पता- ग्राम पोस्ट- नैचाना, तहसील बावल, धारूहेड़ा, सेक्टर-227/4ए, जिला रेवाडी, हरियाणा-123106
प्रेरणा- स्वयं

श्री घनश्याम शर्मा **स.सं:-26365**
पुत्र श्री चिरंजी लाल
जन्मतिथि/आयु-15.01.1960 **शासन**-मुण्डावरिया
शिक्षा- मैट्रिक **दूरभाष**-9711029033
व्यवसाय-स्वयं का व्यवसाय
परिवार- पत्नी श्रीमती ललिता देवी
संतति- दो पुत्र
मूल निवास- धुलपुरी,नियर चन्दोली,अलवर, राज
वर्तमान पता- ए-885, शास्त्री नगर, दिल्ली-110052

प्रेरणा- श्री बनवारी लाल, मंत्री, शाखासभा, शास्त्री नगर

श्री पूरनमल शर्मा **स.सं:-26366**
पुत्र स्व. श्री चन्दगी राम जांगिड
जन्मतिथि/आयु-61 वर्ष **शासन**-
शिक्षा- **दूरभाष**-9250436664
व्यवसाय-कारपेन्टर
परिवार- पत्नी श्रीमती उर्मिला देवी
संतति- चार
मूल निवास- ग्राम जालपिवास, तहसील मुण्डावर
वर्तमान पता- आर जेड-सी-117, जीवन पार्क, उत्तम नगर, नई दिल्ली-110059
प्रेरणा- श्री रामपाल जांगिड, उत्तम नगर, दिल्ली

श्री राजेश शर्मा **स.सं:-26367**
पुत्र स्व. श्री प्रहलाद शर्मा
जन्मतिथि/आयु-48वर्ष **शासन**-चोयल
शिक्षा-12वीं **दूरभाष**-9810444952
व्यवसाय-प्राइवेट सर्विस
परिवार- पत्नी श्रीमती भारती शर्मा
संतति- दो
मूल निवास- ग्राम ककराय,नारनौल,महेन्द्रगढ,हरि0
वर्तमान पता-डी-2/58, जीवन पार्क, उत्तम नगर, दिल्ली-110059

प्रेरणा- स्वयं

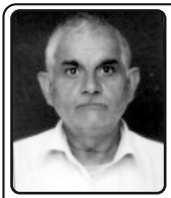

श्री रामदास **स.सं:-26368**
पुत्र स्व. चन्द्रभान
जन्मतिथि/आयु-08.10.1959 **शासन**-कश्यप
शिक्षा-10वीं **दूरभाष**-9350888117
व्यवसाय-राजमिस्त्री
परिवार- पत्नी श्रीमती पूनम
संतति- तीन
मूल निवास- दिल्ली
वर्तमान पता- बी-49, जीवन पार्क, सोम बाजार, पंखा रोड, उत्तम नगर, दिल्ली-110006
प्रेरणा- श्री रामपाल जागिड, उत्तम नगर, दिल्ली

श्री रामदेव जांगिड़ **स.सं:-26369**
पुत्र श्री भागमल सिंह
जन्मतिथि/आयु-01.01.1986 **शासन**-
शिक्षा- **दूरभाष**-9871203316
व्यवसाय-
परिवार-
संतति-
मूल निवास-
वर्तमान पता- बी-43, बिन्दापुर एक्सटेंशन, उत्तम नगर, नई दिल्ली-110059

प्रेरणा- स्वयं

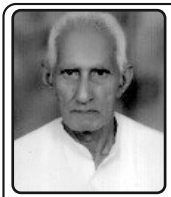

श्री रामपाल जांगिड **स.सं:-26370**
पुत्र श्री आशा राम
जन्मतिथि/आयु-73 वर्ष **शासन**-सीदड
शिक्षा-मैट्रिक, **दूरभाष**-8527121263
व्यवसाय-सेवा निवृत
परिवार- पत्नी श्रीमती कैलाश वती
संतति- दो पुत्र, दो पुत्री
मूल निवास- ग्राम झाल, जिला शामली, उ0प्र0
वर्तमान पता- आर जैड- ए-23, बिन्दापुर एक्सटेंशन, उत्तम नगर, दिल्ली-110059
प्रेरणा- स्वयं

श्री मोहन कुमार जांगिड **स.सं:-26371**
पुत्र श्रीमति मुनेश देवी जांगिड
जन्मतिथि/आयु-09.09.1980 **शासन**-झुलझुलिया
शिक्षा-स्नातक, **दूरभाष**-9311901290
व्यवसाय- स्वयं का व्यवसाय
परिवार- पत्नी श्रीमती रजनी शर्मा
संतति- दो पुत्र,
मूल निवास- रंछाड, उ0प्र0 जिला बागपत
वर्तमान पता- बी ब्लाक-, मकान न-111, सोमबाजार रोड, निकट, सुनील डेयरी, जीवन पार्क, पंखा रोड, नई दिल्ली-110059
प्रेरणा- श्रद्धेय श्री अमर सिंह जी

श्री यशपाल जांगिड़ **स.सं:-26372**
पुत्र श्री बीरबल सिंह
जन्मतिथि/आयु-15.01.1958 **शासन**-झुलझुलिया
शिक्षा-12वीं, **दूरभाष**-9810287877
व्यवसाय-निजि व्यवसाय
परिवार- पत्नी श्रीमती सुशीला जांगिड
संतति- एक पुत्री, दो पुत्र
मूल निवास- ग्राम अन्छाड, तह0बडौत, बागपत
वर्तमान पता- ई-1, जीवन पार्क, उत्तम नगर, नई दिल्ली-110059

प्रेरणा- स्वयं

श्री राजेन्द्र प्रसाद शर्मा **स.सं:-26373**
पुत्र श्री शिवदत्त शर्मा
जन्मतिथि/आयु-02.08.1963 **शासन**-जाले
शिक्षा-12वीं **दूरभाष**-9212739037
व्यवसाय-सर्विस प्राइवेट
परिवार- पत्नी श्रीमती सुमन शर्मा
संतति- दो
मूल निवास- हापुड, उ0प्र0
वर्तमान पता- सी-119 ए, जीवन पार्क, उत्तम नगर, नई दिल्ली-110059

प्रेरणा- स्वयं

श्री निखिल शर्मा **स.सं:-26374**
पुत्र श्री सुनील शर्मा
जन्मतिथि/आयु-01.01.1981 **शासन**-
शिक्षा- **दूरभाष**-9810100166
व्यवसाय-
परिवार-
संतति-
मूल निवास- दिल्ली
वर्तमान पता- सी-157, जीवन पार्क, उत्तम नगर, दिल्ली-110059

प्रेरणा- स्वयं

श्री दीपक जांगिड **स.सं:-26378**
पुत्र श्री ईश्वर राम जांगिड
जन्मतिथि/आयु-20.03.1985 **शासन**-धामू
शिक्षा-एम.कॉम,एल.एल.बी **दूरभाष**-9414250984
व्यवसाय-कर सलाहकार
परिवार- पत्नी श्रीमती पूजा
संतति- एक पुत्र
मूल निवास- गोरीसर
वर्तमान पता- पंचवटी, भारतीय कुंए के पास, नई सड़क, चूरू, राजस्थान-331001
प्रेरणा- श्री महावीर प्रसाद मिषण, चूरू

श्री रमेश कुमार काकटिया स.सं:-26379
पुत्र स्व. श्री सागरमल काकटिया
जन्मतिथि/आयु-10.07.1971 **शासन**-काकटिया
शिक्षा- 9वीं **दूरभाष**-9887350999
व्यवसाय-
परिवार- पत्नी श्रीमती सुमन देवी
संतति- तीन पुत्र, एक पुत्री
मूल निवास- चूरू
वर्तमान पता- सन्तोषी माता मन्दिर के पास, चुरू, राजस्थान-331001

प्रेरणा- श्री बैजूराम राजोतिया

श्री लीलाधर राजोतिया **स.सं:-26380**
पुत्र श्री रतन लाल राजोतिया
जन्मतिथि/आयु-01.08.1965 **शासन**-राजोतिया
शिक्षा-8वीं **दूरभाष**-9414084285
व्यवसाय-वुडन फर्नीचर
परिवार- पत्नी श्रीमती निर्मला देवी
संतति- तीन
मूल निवास- चूरू
वर्तमान पता-गढ़ के पीछे राज का वाडा, वार्ड नंबर 34, चूरू, राजस्थान-331001
प्रेरणा- स्वयं

श्री ओम प्रकाश राजोतिया स.सं:-26381
पुत्र श्री दुर्गा दत्त राजोतिया
जन्मतिथि/आयु-05.08.1972 **शासन**-राजोतिया
शिक्षा-सी0सेकण्डरी **दूरभाष**-9414864948
व्यवसाय-वुडन फर्नीचर
परिवार- पत्नी श्रीमती मन्जू
संतति- तीन
मूल निवास- चूरू
वर्तमान पता- जी 11 सी रोड नंबर 1 औद्योगिक क्षेत्र चूरू, जिला चूरू,राजस्थान-331001
प्रेरणा- श्री लीलाधर राजोतिया

श्री किशन लाल जांगिड़ **स.सं:-26382**
पुत्र स्वर्गीय श्री भानी राम जांगिड
जन्मतिथि/आयु-05.07.1947 **शासन**-काकटिया
शिक्षा- हायर सैकेण्डरी **दूरभाष**-9414235979
व्यवसाय- सेवा निवृत भू0अ0 निरीक्षक
परिवार- पत्नी श्रीमती विद्या देवी
संतति- तीन पुत्र , तीन पुत्री
मूल निवास- चूरू
वर्तमान पता- बी-लोहिया का कुआँ, वार्ड नंबर 4 ,चूरू,राजस्थान-331001

प्रेरणा- स्वयं

श्री नरोत्तम लाल जांगिड़ **स.सं:-26383**
पुत्र श्री हनुमान प्रसाद जांगिड
जन्मतिथि/आयु-03.09.1946 **शासन**-मीषण
शिक्षा-अभियान्त्रिकी **दूरभाष**-9462143721
व्यवसाय-सेवा निवृत अधिशासी अभियन्ता
परिवार- पत्नी श्रीमती सरस्वती देवी जांगिड
संतति- तीन पुत्र, दो पुत्री
मूल निवास- रामगढ़ (शेखावटी) जिला सीकर
वर्तमान पता- वार्ड नं 29 मनोरंजन क्लैब की पीछे पोस्ट चूरू, चूरू,राजस्थान331001
प्रेरणा- श्री महावीर प्रसाद मीषण, चूरू

श्री सुभाष चंद्र चोयल **स.सं:-26384**
पुत्र श्री जगदीश प्रसाद चोयल
जन्मतिथि/आयु-04.05.1964 **शासन**-चोयल
शिक्षा-10वीं, **दूरभाष**-9414084227
व्यवसाय- हेण्डीक्राफ्ट
परिवार- पत्नी श्रीमती वसन्ती
संतति-
मूल निवास- चूरू
वर्तमान पता- धर्म स्तूप के पास चूरू,राजस्थान-331001

प्रेरणा- श्री लीलाधर राजोतिया, चूरू

श्री मनी राम सुथार **स.सं:-26385**
पुत्र श्री दुर्गाराम सुथार
जन्मतिथि/आयु-01.08.1963 **शासन**-मोटियार
शिक्षा-एमए, बीएड, **दूरभाष**-9982279840
व्यवसाय-
परिवार- पत्नी श्रीमती सन्तोष
संतति-
मूल निवास-
वर्तमान पता- गाँव - बूचावास, चूरू,राजस्थान

प्रेरणा- स्वयं

श्री राम चंद्र छाबड़ा **स.सं:-26386**
पुत्र श्री सुगना राम छाबड़ा
जन्मतिथि/आयु-01.01.1962 **शासन**-छाबड़ा
शिक्षा-5वीं **दूरभाष**-9413361897
व्यवसाय-बिल्डिंग मेटेरियल
परिवार- पत्नी श्रीमती फुली देवी
संतति- एक
मूल निवास-
वर्तमान पता- तारा नगर वार्ड नंबर 3 तारा नगर जिला चूरू, चूरू,राजस्थान-331304
प्रेरणा- स्वयं

श्री भंवर लाल दमीवाल **स.सं:-26387**
पुत्र श्री पेमाराम जांगिड
जन्मतिथि/आयु-22.07.1982 **शासन**- दमीवाल
शिक्षा- 8वीं **दूरभाष**-9460411710
व्यवसाय-
परिवार- पत्नी श्रीमती सुमित्रा देवी
संतति- तीन पुत्र
मूल निवास-
वर्तमान पता- तारानगर, जिला चूरू, राजस्थान-331001

प्रेरणा- श्री गिरधारी लाल जांगिड, चूरू

श्री राजेन्द्र प्रसाद बरवाडिया **स.सं:-26388**
पुत्र श्री परतुराम बरवाडिया
जन्मतिथि/आयु-14.08.1973 **शासन**-बरवाडिया
शिक्षा-9वीं **दूरभाष**-9571301761
व्यवसाय-
परिवार- पत्नी श्रीमती रतनी देवी
संतति- दो पुत्र, एक पुत्री
मूल निवास-
वर्तमान पता- वार्ड न. 1, तारानगर, जिला चूरू, राजस्थान-331001

प्रेरणा- स्वयं

श्री रामेश्वर लाल छावडा स.सं:-26389
पुत्र श्री अत्रुराम छावडा
जन्मतिथि/आयु-11.10.1951 **शासन**-छावडा
शिक्षा-बीए, बीएड, **दूरभाष**-9460213777
व्यवसाय-
परिवार- पत्नी श्रीमती गीता देवी
संतति- दो पुत्र, दो पुत्री
मूल निवास-
वर्तमान पता- तारानगर, जिला चूरू, राजस्थान-331001

प्रेरणा- स्वयं

श्री लालचन्द बरवाडिया **स.सं:-26390**
पुत्र श्री फरसा राम जांगिड
जन्मतिथि/आयु-18.08.1965 **शासन**-बरवाडिया
शिक्षा-हायर सेकण्डरी **दूरभाष**-9460366986
व्यवसाय-
परिवार- पत्नी श्रीमती दुर्गा
संतति- चार पुत्री, दो पुत्र
मूल निवास-
वर्तमान पता-तारानगर, जिला चूरू, राजस्थान-331001

प्रेरणा- स्वयं

श्री विनोद कुमार दमीवाल **स.सं:-26391**
पुत्र श्री चेतराम जांगिड
जन्मतिथि/आयु-05.07.1987 **शासन**-दमीवाल
शिक्षा-बीए, **दूरभाष**-9460558552
व्यवसाय-
परिवार- पत्नी श्रीमती सन्जू देवी
संतति- एक पुत्र, एक पुत्री
मूल निवास-
वर्तमान पता- तारानगर, जिला चूरू,राजस्थान-331001

श्री बेगराज धामू **स.सं:-26392**
पुत्र श्री चन्दुराम जांगिड
जन्मतिथि/आयु-01.12.1952 **शासन**-धामू
शिक्षा- हायर सैकेण्डरी **दूरभाष**-9414985855
व्यवसाय-
परिवार- पत्नी श्रीमती विद्या देवी
संतति- दो पुत्र , दो पुत्री
मूल निवास-
वर्तमान पता- ग्राम पोस्ट- बलाऊ ताल, तारानगर, चूरू, राजस्थान-331304

प्रेरणा- स्वयं

श्री शंकर लाल जांगिड़ **स.सं:-26393**
पुत्र श्री लादुराम जांगिड
जन्मतिथि/आयु-01.05.1973 **शासन**-धामू
शिक्षा-5वीं **दूरभाष**-9950497731
व्यवसाय-
परिवार- पत्नी श्रीमती ज्ञानधारा
संतति- तीन पुत्र, चार पुत्री
मूल निवास-
वर्तमान पता- वार्ड नं 12, नई सड़क, 8 न. स्कूल के पास, तहसील-चूरू, जिला चूरू,राजस्थान-331001
प्रेरणा- श्री महावीर प्रसाद मीषण, चूरू

श्री परमेश्वर लाल **स.सं:-26394**
पुत्र श्री रावतराम काकटिया
जन्मतिथि/आयु-04.02.1957 **शासन**-काकटिया
शिक्षा-8वीं, **दूरभाष**-8104140553
व्यवसाय-
परिवार- पत्नी श्रीमती उषा देवी
संतति- एक पुत्र, तीन पुत्री
मूल निवास-
वर्तमान पता- वार्ड न. 19, नई सड़क, वेदो की धर्मशाला के पास, तहसील-चूरू,जिला चूरू, राजस्थान-331001
प्रेरणा- प्रेरणा- श्री महावीर प्रसाद मीषण, चूरू

श्री राधेश्याम राजोतिया **स.सं:-26395**
पुत्र श्री रामनिवास राजोतिया
जन्मतिथि/आयु-02.07.1957 **शासन**-राजोतिया
शिक्षा-एमए, बीएड, **दूरभाष**-9413674324
व्यवसाय-
परिवार- पत्नी श्रीमती ललिता
संतति- एक पुत्री, दो पुत्र
मूल निवास-
वर्तमान पता- वार्ड न. 34, गढ के पीछे राज का बाडा, जिला चूरू, राजस्थान-331001
प्रेरणा- श्री गिरधारी लाल जांगिड, चूरू

श्री केशर देव डाडिवाल **स.सं:-26395**
पुत्र श्री सोहन लाल जांगिड
जन्मतिथि/आयु- **शासन**-डाडिवाल
शिक्षा- **दूरभाष**-9982907476
व्यवसाय-
परिवार-
संतति-
मूल निवास-
वर्तमान पता- ग्राम ढाढर, तहसील चूरू, जिला चूरू, राजस्थान-

प्रेरणा- श्री शंकर लाल धामू

BHARAT WHEEL

Manufacturer of Rims for Tractor,
Motor Vehicle, Earthmoving Machine.

Our valued customers

VECTRA MANITOU GROUP JCB ESCORTS

Bharat Wheel Private Limited
Muzaffarnagar Road, Shamli - 247776, UP, India
Email : info@bharatwheel.com
www.bharatwheel.com

SHARMA
Group of companies

FULFILLING DREAMS.

LATE SHREE
KANHAIYALAL
SHARMA
(CHOYAL)
FOUNDER

HYUNDAI

AUTHORISED HYUNDAI DEALER
SHARMA HYUNDAI
Since 1998

Ashram Road Call : 9099978327	**Satellite** Call : 9099978334
Parimal Garden Call : 9099978328	**Naroda** Call : 9099938777

TOYOTA

Authorised Toyota Dealer : **NARMADA TOYOTA**
VADODARA : 9099916601 I ANAND : 9099916631/32

MG
MORRIS GARAGES
Since 1924

Authorised MG Dealer :
Kayakalp Cars Pvt. Ltd.
Zorba Complex,Akshar chowk, OP Road,Vadodara.
Ph : 6358800230/31

NRJ HEPL

N.R.J. Hitech Engineers Pvt. Ltd.

(An ISO Certified company)
CIN-U74140DL2014PTC273625

Director
Naresh Kr. Jangra
9990392999

DEALS IN :

- Fire Fighting
- Hydrant System
- Sprinkler System
- Fire extinguishers
- Air Piping, Fire Alarm
- Smoke Detection System
- Fire Rated Doors
- Fire Pumps
- Electrical Installation
- Construction

B-207/S Kalindi Apartment, Samiah Lake City, Kashipur Road,
Rudrapur (U.S.Nagar) Uttarakhand -263153

Head Office: RZ14, A-Block, Gali No. 1&2, Deenpur Extension, Najafgarh, New Delhi-43

E-mail : nrjhepl@gmail.com, nrjhitechengineers@gmail.com

Posted at: DELHI R.M.S., Delhi-06

Registered With The Registrar of News Papers For INDIA, Under Regd. No. 25512/72

D.L.(DG-11)/8009/2021-23
Posted Under Licence No. U(DN)39/2021 of Post without prepayment of postage

BLAZE INTERNATIONAL
POLYMERS RECYLING IMPORTER & EXPORTER OF POLYMERS
292, Sect. 2, KASEZ, Gandhidham (Kutch) Ph.: 02836-252950

POLYREC PROCESSORS P LTD.
IMPORTERS & EXPORTER OF POLYMERS
278/278, Sect. 3, KASEZ Gandhidham (Kutch) Gujarat
Phone : 02836-252830

RONAKSH INTERNATIONAL
Office : F-105, T.M. Tower, Near Joshi Petrol Pump
Gandhidham (Kutch) Gujarat, Mobile : 09978606178

VISHAL INTERNATIONAL
IMPORTERS & TRADERS OF PLOYMERS
B-770, NU-4, Sapna Nagar, Gandhidham (Kutch) Gujarat
E-mail : agglopast@gmail.com

Rudraksh Plastics Pvt. Ltd.
Shed #8B, Sector-2, Kandla Special Ecomomic Zone
Gandhidham (Kutch) Gujarat - 370230

माता मोहिनी देवी शर्मा मेमोरियल ट्रस्ट
गांधीधाम (कच्छ) गुजरात
- मुख्य उद्देश्य -
शिक्षा, राजनीतिक, सामाजिक उत्थान, गौ-सेवा, वैदिक प्रचार प्रसार

Printed, Published by Sh. J.P. Sharma, K-29, Ward-1, Desu Road, Mehrauli, New Delhi-30, on behalf of (Owner) Akhil Bhartiya Jangid Brahman Mahasabha, 440, Haveli Haider Quli, Chandni Chowk, Delhi-06, Printed at M/s. Kamal Printers, Anand Parbat, N.D.-05,Ph.:9810622239, Published at Delhi, Editor Sh. Om Prakash Sewal, 706/35, Near Triveni Park, Janta Colony,Rohtak, Hr.

Posting Date: 22-27 Each Month
Publication Date: 15 October 2021
Weight: 100 gms. Cost: Rs. 240 Yearly

अखिल भारतीय जांगिड ब्राह्मण महासभा
440, हवेली हैदर कुली,
चाँदनी चौक, दिल्ली-110 006